Jannat Ki Tayyari (Hindi)

जन्नत की तय्यारी

☆ अदना जन्नती 5
☆ जन्नत का बाज़ार और दीदारे रब्बे ग़फ़्फ़ार عزوجل 14
☆ जन्नत में ले जाने वाले आ'माल 29
☆ ब-रकाते अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ 27
☆ म-दनी क़ाफ़िले पर सरकार صلی اللہ علیہ وسلم की करम नवाज़ी 39
☆ हबशी चीख़ें मार कर रोने लगा 98
☆ जगह ब जगह म-दनी इन्आ़मात की तरग़ीबात
☆ जा बजा अकाबिरीने अहले सुन्नत के इश्क़ भरे वा'क़िआ़त अश्आ़र

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج۱ ص۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नत की तय्यारी

येह रिसाला (**जन्नत की तय्यारी**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पेशकश : **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल का महका महका गुलदस्ता

जन्नत की तय्यारी

पेशकश

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह्मदआबाद

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

नाम रिसाला : जन्नत की तय्यारी

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : दिसम्बर 2017

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

अजमेर शरीफ़ : 19/216, फ़लाहे दारैन मस्जिद, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान। फ़ोन : 0145-2629385

बरेली शरीफ़ : दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यूपी। फ़ोन : 09313895994

गुलबर्गा शरीफ़: फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। फ़ोन : 09241277503

बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी। फ़ोन : 09369023101

कानपूर : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी। फ़ोन : 09619214045

कलकत्ता : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल। फ़ोन : 033-32615212

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर, महाराष्ट्र। फ़ोन : 09326310099

अनन्त नाग : म-दनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। फ़ोन : 09797977438

इन्दौर : 13, बॉम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। फ़ोन : 09303230692

बेंगलोर : 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कॉम्पलेक्स, नवां मेन पल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, अ़रबिक कॉलेज, बेंगलोर-45 कर्नाटक। फ़ोन : 08088264783

हुबली : A.J. मुधल कॉम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक। फ़ोन : 08363244860

E.mail : ilmia@dawateislami.net • www.dawateislami.net

तम्बीह : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	5	ह़लाल खाना और सुन्नत अपनाना	37
अदना जन्नती	5	वुज़ू	38
जन्नत के द-रजे	7	म-दनी क़ाफ़िले पर करम नवाज़ी	39
जन्नत की दुआ	7	वुज़ू के बा'द की दुआ	42
शाने सिद्दीक़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	8	तह़िय्यतुल वुज़ू	43
जन्नती हूरें	9	अज़ान व इक़ामत	44
जन्नत की हूरें कैसी होंगी ?	9	अज़ान का जवाब	45
हूर का मह्र	11	सफ़ की दुरुस्ती	46
जन्नत की नहरें	11	मस्जिद बनाना	47
जन्नतियों का खाना पीना	12	सलाम को आ़म करना, खाना खिलाना,	47
जन्नतियों के लिबास	13	नमाज़े तहज्जुद	48
जन्नत का बाज़ार और		नमाज़े चाश्त	48
दीदारे रब्बे ग़फ़्फ़ार جَلَّ جَلَالُہٗ	14	पांच आ'माल	49
आह ! कौन ग़ौर करे ?	19	कलिमए त़य्यिबा	50
जन्नत ईमानदार,		नमाज़े जनाज़ा	50
नेक आ'माल वालों के लिये	21	जन्नती का जनाज़ा	51
जन्नत वाले ही काम्याब हैं	21	ता'ज़ियत	51
जन्नत क़ल्बे सलीम वालों के लिये है	22	तीन बच्चों का इन्तिक़ाल	52
मोतियों का मह़ल	22	कच्चा बच्चा	52
जन्नत में ले जाने वाले आ'माल	23	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना	
ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	23	और हुस्ने अख़्लाक़	55
इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	24	छ (6) चीज़ों की ज़मानत	56
मह़ब्बते सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان	26	पेट का क़ुफ़्ले मदीना वग़ैरा	56
इ़ल्मे दीन	27	मोटा मच्छर	57
ब-रकाते अमीरे अहले सुन्नत	27	जानदार बदन की आफ़तें	58
अगर आप वाक़ेई नेक बनना चाहते हैं तो....	30	पेटू पर गुनाहों की यलग़ार	58
रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	32	हलके बदन की फ़ज़ीलत	59
नेक आ'माल के लिये कमर बस्ता हो जाइये	33	किस का कितना वज़्न होना चाहिये	60
इ़ल्मे दीन की जुस्त-जू	34	किसी से कुछ न मांगना	60
झगड़ा तर्क करना	36	मुसल्मान से भलाई	61

www.dawateislami.net

स-दक़ा और क़र्ज़	62	गुस्सा पीना	82
रोज़ा	62	अ़फ़्वो दर गुज़र	82
कलिमा, रोज़ा और स-दक़ा	63	तीन मुबारक ख़स्लतें	84
र-मज़ान की रातों में नमाज़	64	पर्दा पोशी	84
सफ़रे ह़ज व उ़मरे में फ़ौतगी	64	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत	86
राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर	65	सलाम आ़म करना	86
मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !	66	घर में भी सलाम करना	87
क़ुरआन पढ़ने वाला	68	घर में म-दनी माह़ोल बनाने के	
ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ल्क़े	69	म-दनी फूल	88
कलिमाते रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ	71	नेकी की दा'वत देना और	
लाह़ौल शरीफ़ की कसरत	71	बुराई से मन्अ़ करना	91
दुरूद शरीफ़	72	नाबीना पन पर सब्र	93
ख़िदमते वालिदैन	73	मुसल्मानों से तक्लीफ़ दूर करना	95
सिलए रेह़मी	75	ह़लाल कमाना और	
बहन बेटियों की परवरिश	76	कारे ख़ैर में ख़र्च करना	96
यतीम की कफ़ालत	76	क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी	97
मरीज़ की इ़यादत	77	ज़िना से बचना	97
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुलाक़ात	78	ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा	98
ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश	79	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर	99
ह़ाजत रवाई	80	सवाब से मह़रूमी	101
मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना	81	मआख़िज़ो मराजेअ़	103

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

जन्नत की तय्यारी[1]

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह तह़रीरी बयान अव्वल ता आख़िर पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जन्नत की तय्यारी की ख़ूब रग़बत ह़ासिल होगी।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**काले बिच्छू**" के सफ़ह़ा 1 पर नक़्ल करते हैं : **सरकारे** मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।"

(فردوسُ الْاخبار ج ٢ ص ٤٧١ حدیث ٨٢١٠ دار الفکر بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अदना जन्नती

ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, सरापा जूदो सख़ावत, मह़बूबे रब्बुल

مدینہ

1 : येह बयान निगराने शूरा ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی ने 15 र-मज़ानुल मुबारक 1428 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 28 सितम्बर 2007 सि.ई. फ़ैज़ाने मदीना सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद) के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया जा रहा है।

www.dawateislami.net

इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "हज़रते मूसा **कलीमुल्लाह** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने जब अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सब से कम द-रजे वाले जन्नती के बारे में सुवाल किया कि "उस की मन्ज़िल कितनी बड़ी होगी ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि "वोह शख़्स जन्नतियों के **जन्नत** में दाख़िल होने के बा'द आएगा तो उस से कहा जाएगा कि "**जन्नत** में दाख़िल हो जा।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब ! عَزَّوَجَلَّ कैसे दाख़िल हो जाऊं ? हालां कि लोग अपने महल्लात में चले गए और उन्हों ने अपनी मनाज़िल को ले लिया।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि "क्या तू इस बात पर राज़ी है कि तेरे लिये दुन्या के बादशाहों जैसी ने'मतें हों।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब ! عَزَّوَجَلَّ मैं राज़ी हूं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : "तेरे लिये वोही है और उस की मिस्ल और उस की मिस्ल और उस की मिस्ल।" तो जब रब عَزَّوَجَلَّ उस के इन्आ़मात में पांच गुना इज़ाफ़ा फ़रमाएगा तो वोह बोल उठेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : येह सब तेरे लिये है और इस से दस गुना मज़ीद और तेरे लिये तेरे नफ़्स की चाहत के मुताबिक़ और तेरी आंखों की लज़्ज़त के मुताबिक़ ने'मतें हैं।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब ! عَزَّوَجَلَّ मैं राज़ी हूं।" फिर हज़रते मूसा **कलीमुल्लाह** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने सब से **आ'ला द-रजे वाले जन्नती** के बारे में सुवाल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जिन को मैं ने पसन्द कर लिया और इन की इ़ज़्ज़तो करामत पर मैं ने अपने दस्ते कुदरत से मोहर लगा दी तो न उसे किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर इस का ख़याल गुज़रा।"

(مسلم، کتاب الایمان، باب ادنی اهل الجنة منز لة فیها، حدیث ۱۸۹، ص ۱۱۸)

www.dawateislami.net

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा
जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत के द-रजे

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**जन्नत** में 100 द-रजे हैं हर दो द-रजों में आस्मान व ज़मीन जितना फ़ासिला है और **फ़िरदौस सब से बुलन्द द-रजा है** । उस से **जन्नत** के चार दरिया बह रहे हैं और उस के ऊपर अ़र्श है सो जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करो तो **फ़िरदौस** का सुवाल करो ।"

(جامع الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء فی.....الخ،الحدیث ۲۵۳۹،ج٤،ص۲۳۸)

मेरी सरकार के क़दमों में ही اِنْ شَآءَاللّٰہ
मेरा फ़िरदौस में अ़त्तार ठिकाना होगा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 185)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि **नबियों के सुल्त़ान,** सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने तीन मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **जन्नत** का सुवाल किया तो **जन्नत** दुआ़ करती है कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस को **जन्नत** में दाख़िल कर दे और जिस शख़्स ने तीन मर्तबा दोज़ख़ से पनाह मांगी तो दोज़ख़ दुआ़ करती है कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस को दोज़ख़ से पनाह में रख ।

(جامع الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء فی.....الخ،الحدیث ۲۵۸۱،ج٤،ص۲۵۷)

www.dawateislami.net

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शाने सिद्दीक़ी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **सरकारे मदीना,** सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स अपने माल में दो जोड़े **अल्लाह** तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करे, उसे **जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा** और **जन्नत** के आठ दरवाज़े हैं पस जो शख़्स नमाज़ी होगा उस को नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो रोज़ादारों में से होगा उस को रोज़े के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो स-दक़ा देने वालों में से होगा, उस को स-दक़ा के दरवाज़े से आवाज़ दी जाएगी और जो अहले जिहाद से होगा, उसे जिहाद के दरवाज़े से त़लब किया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि हर शख़्स को किसी न किसी दरवाज़े से बुलाया जाएगा तो क्या किसी को इन तमाम दरवाज़ों से भी बुलाया जाएगा ? नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां" और मुझे उम्मीद है कि वोह आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ही होंगे।

(مکاشفة القلوب،الباب الثانی والسبعون فی صفة الجنة، مراتب اهلها، ص٢٤٤)

सिद्दीक़ो उ़मर दोनों भेजेंगे ग़ुलामों को
जिस वक़्त खुलेगा दर मौला तेरी जन्नत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जन्नती हूरें

पारह 27 **सूरए रह़मान** आयत 56, 57, 58 में इर्शाद होता है :

فِيۡهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرۡفِ ۙ لَمۡ يَطۡمِثۡهُنَّ اِنۡسٌ قَبۡلَهُمۡ وَلَا جَآنٌّ ۚ﴿۵۶﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ﴿۵۷﴾ كَاَنَّهُنَّ الۡيَاقُوۡتُ وَالۡمَرۡجَانُ ۚ﴿۵۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन बिछोनों पर वोह औ़रतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे गोया वोह ला'ल और मूंगा हैं।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی "**तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इन आयात के तह़्त फ़रमाते हैं : **जन्नती** बीबियां अपने शोहर से कहेंगी : मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ के इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! **जन्नत** में मुझे कोई चीज़ तुझ से ज़ियादा अच्छी नहीं मा'लूम होती तो उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द जिस ने तुझे मेरा शोहर किया और मुझे तेरी बीबी (बीवी) बनाया।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत की हूरें कैसी होंगी ?

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی (अल मु-तवफ़्फ़ा 1376 हि.) अह़ादीस के मज़ामीन को बयान करते हुए **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 1, सफ़ह़ा 79 ता 82 पर लिखते हैं : "अगर हूर अपनी हथेली ज़मीनो आस्मान के दरमियान निकाले तो उस के ह़ुस्न की वज्ह से मख़्लूक़ फ़ितने में पड़ जाए और अगर अपना दोपट्टा ज़ाहिर करे तो उस की ख़ूब सूरती के आगे आफ़्ताब ऐसा हो जाए

www.dawateislami.net

जैसे आफ़्ताब के सामने चराग़। और जन्नती सब एक दिल होंगे, उन के आपस में कोई इख़्तिलाफ़ व बुग़्ज़ न होगा। उन में हर एक को हूरे ईन में कम से कम दो बीबियां (बीवियां) ऐसी मिलेंगी कि सत्तर सत्तर (70) जोड़े पहने होंगी, फिर भी इन लिबासों और गोश्त के बाहर से उन की पिंडलियों का मग़्ज़ दिखाई देगा, जैसे सफ़ेद शीशे में शराबे सुर्ख़ दिखाई देती है। आदमी अपने चेहरे को उस के रुख़्सार में आईने से भी ज़ियादा साफ़ देखेगा, मर्द जब उस के पास जाएगा, उसे हर बार कुंवारी पाएगा मगर उस की वज्ह से मर्द व औ़रत किसी को कोई तक्लीफ़ न होगी। **जन्नत** की औ़रत सात समुन्दरों में थूके तो वोह शहद से ज़ियादा शीरीं हो जाएं। जब कोई बन्दा **जन्नत** में जाएगा तो उस के सिरहाने और पाईंती (पाउं की त़रफ़) में दो हूरें निहायत अच्छी आवाज़ से गाएंगी मगर उन का गाना शैत़ानी मज़ामीर (आलाते मूसीक़ी) नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द व पाकी होगा वोह ऐसी ख़ुशगुलू होंगी कि मख़्लूक़ ने वैसी आवाज़ कभी न सुनी होगी और येह भी गाएंगी कि हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी न मरेंगी, हम चैन वालियां हैं कभी तक्लीफ़ में न पड़ेंगी, हम राज़ी हैं नाराज़ न होंगी। मुबारक बाद उस के लिये जो हमारा और हम उस के हों, अदना **जन्नती** के लिये 80 हज़ार ख़ादिम और 72 बीबियां (बीवियां) होंगी। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 1, स. 79, 84)

दाख़िले ख़ुल्द हम को जो फ़रमाए तू हम हों और हूरो ग़िल्मां लबे आब जू
और जामे त़हूर और मीना सबू देखें आ'दा तो रह जाएं पी कर लहू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश, अज़ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن, स. 16)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हूर का महर

हज़रते सय्यिदुना अज़्हर बिन मुग़ीस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب जो कि निहायत इबादत गुज़ार थे, फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक ऐसी औ़रत को देखा जो दुन्या की औ़रतों की त़रह़ न थी। तो मैं ने उस से पूछा कि तुम कौन हो ? उस ने जवाब दिया : "मैं **जन्नत** की हूर हूं।" येह सुन कर मैं ने उस से कहा : मेरे साथ शादी कर लो। उस ने कहा : मेरे मालिक के पास शादी का पैग़ाम भेज दो और मेरा महर अदा कर दो। मैं ने पूछा : तुम्हारा महर क्या है ? तो उस ने कहा : रात में देर तक नमाज़ पढ़ना।

(जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, स. 148)

नारे जहन्नम से तू बचाना   ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना
या रब अज़् पए शाहे मदीना   या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत की नहरें

जन्नत में चार दरिया हैं एक पानी का, दूसरा दूध का, तीसरा शह्द का, चौथा शराब का, फिर इन से नहरें निकल कर हर एक के मकान में जा रही हैं। वहां की नहरें ज़मीन खोद कर नहीं बल्कि ज़मीन के ऊपर रवां हैं, नहरों का एक कनारा मोती का दूसरा याक़ूत का है और इन नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की है।

(الترغیب و الترھیب،کتاب صفۃ الجنۃ و النار،فصل فی انھار الجنۃ،الحدیث٣٥/٥٧٣٤،ج٤،ص٣١٥)

अल्लाह तआ़ला पारह 26 **सूरए मुह़म्मद** आयत नम्बर 15 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَؕ فِیْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَیْرِ اٰسِنٍۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ یَتَغَیَّرْ طَعْمُهٗۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّىؕ وَ لَهُمْ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَ مَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِی النَّارِ وَ سُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अह़वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़ गारों से है इस में ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़े और ऐसे दूध की नहरें हैं जिस का मज़ा न बदला और ऐसी शराब की नहरें हैं जिस के पीने में लज़्ज़त है और ऐसी ही शहद की नहरें हैं जो साफ़ किया गया और उन के लिये इस में हर क़िस्म के फल हैं और अपने रब की मग़्फ़िरत, क्या ऐसे चैन वाले उन के बराबर हो जाएंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।

मैं उन के दर का भिकारी हूं फ़ज़्ले मौला से
ह़सन फ़क़ीर का जन्नत में बिस्तरा होगा

(ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن, स. 37)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नतियों का खाना पीना

जन्नतियों को शराब पिलाई जाएगी मगर वहां की शराब दुन्या की शराब की त़रह़ बदबूदार, कड़वी, बे अ़क़्ल करने वाली और आपे से बाहर करने और नशे वाली न होगी बल्कि वोह पाक शराब इन सब बातों से पाक व मुनज़्ज़ा होगी।

www.dawateislami.net

जन्नतियों को **जन्नत** में एक से एक लज़ीज़ खाने मिलेंगे जो चाहेंगे वोह खाना फ़ौरन हाज़िर हो जाएगा, अगर किसी परिन्दे को देख कर उस का गोश्त खाने को जी चाहेगा तो वोह उसी वक़्त भुना हुवा उन के पास आ जाएगा कम से कम हर एक शख़्स के सिरहाने दस (10) हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे। ख़ादिमों में हर एक के एक हाथ में चांदी और दूसरे हाथ में सोने के पियाले होंगे और हर पियाले में नए नए रंग की ने'मत होगी, जितना खाना खाते जाएंगे, लज़्ज़त में कमी न होगी बल्कि ज़ियादती होती जाएगी, हर निवाले में सत्तर (70) मज़े होंगे, हर मज़ा दूसरे मज़े से मुमताज़ होगा, अगर पानी वग़ैरा की ख़्वाहिश होगी तो कूज़े ख़ुद हाथ में आ जाएंगे। उन में ठीक अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ पानी, दूध, शराब और शहद होगा। पीने के बा'द जहां से आए थे ख़ुद ब ख़ुद वहां चले जाएंगे।

वहां नजासत, गन्दगी, पेशाब वग़ैरा थूक, रींठ, कान का मैल, बदन का मैल अस्लन (बिल्कुल) न होंगे। और डकार व पसीने से मुश्क की ख़ुश्बू निकलेगी। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 81/82)

पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बना लो
करम आक़ा पए अहमद रज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 309)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नतियों के लिबास

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **हुज़ूर** सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **जन्नत** में दाख़िल होगा, उसे ने'मत मिलेगी, न वोह मोहताज होगा न

www.dawateislami.net

उस के कपड़े पुराने होंगे और न उस की जवानी ख़त्म होगी **जन्नत** में वोह कुछ है, जिसे किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी दिल में उस का ख़याल गुज़रा।

(الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة،فصل فی ثیابھم.....الخ،الحدیث۷۹،ج٤،ص٢٩٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से पहला गुरौह जो **जन्नत** में जाएगा, उन की शक्लें चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ होंगी, वोह वहां न थूकेंगे और न नाक साफ़ करेंगे और न क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठेंगे। उन के बरतन और कंघियां सोने और चांदी के होंगे। उन का पसीना कस्तूरी का होगा। उन में से हर एक के लिये दो बीवियां होंगी वोह इस क़दर ह़सीन होंगी कि उन की पिंडलियों का गोश्त ऊपर से नज़र आता होगा, उन के दरमियान इख़्तिलाफ़ होगा और न बुग़्ज़। उन के दिल एक दिल की त़रह़ होंगे। वोह सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करेंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الجنة وصفة،باب فی صفات الجنة.....الخ،الحدیث٢٨٣٤،ص١٥٢٠)

वोही सब के मालिक उन्हीं का है सब कुछ
न आ़सी किसी के न जन्नत किसी की

(ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत का बाज़ार और दीदारे रब्बे ग़फ़्फ़ार (جَلَّ جَلَالُہٗ)

जन्नतियों के लिबास न पुराने होंगे न उन की जवानी फ़ना होगी। **जन्नत** में नींद नहीं कि नींद एक क़िस्म की मौत है और **जन्नत में मौत नहीं**। जन्नती जब **जन्नत** में जाएंगे हर एक अपने आ'माल की मिक़्दार

www.dawateislami.net

से मर्तबा पाएगा और उस के फ़ज़्ल की ह़द नहीं। फिर उन्हें दुन्या के एक हफ़्ते की मिक़्दार के बा'द इजाज़त दी जाएगी कि अपने **परवर दगार** عَزَّوَجَلَّ **की ज़ियारत** करें, अ़र्शे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) ज़ाहिर होगा और **रब** (عَزَّوَجَلَّ) **जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा** और उन जन्नतियों के लिये मिम्बर बिछाए जाएंगे, नूर के मिम्बर, मोती के मिम्बर, याक़ूत के मिम्बर, ज़बर-जद के मिम्बर, सोने के मिम्बर, चांदी के मिम्बर और उन में का अदना मुश्क व काफ़ूर के टीले पर बैठेगा और उन में अदना कोई नहीं, अपने गुमान में कुर्सी वालों को कुछ अपने से बढ़ कर न समझेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का दीदार** ऐसा साफ़ होगा जैसे आफ़्ताब और चौदहवीं रात के चांद को हर एक अपनी अपनी जगह से देखता है कि एक का देखना दूसरे के लिये मानेअ़ (रुकावट) नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर एक पर तजल्ली फ़रमाएगा उन में से किसी को फ़रमाएगा : ऐ फुलां बिन फुलां ! तुझे याद है, जिस दिन तूने ऐसा ऐसा किया था... ? दुन्या के बा'ज़ मआ़सी या'नी गुनाह याद दिलाएगा, बन्दा अ़र्ज़ करेगा : या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तूने मुझे बख़्श न दिया ? फ़रमाएगा : हां ! मेरी मग़्फ़िरत की वुस्अ़त ही की वज्ह से तू इस मर्तबे को पहुंचा, वोह सब इसी ह़ालत में होंगे के अब्र छाएगा और उन पर ख़ुश्बू बरसाएगा कि उस की सी ख़ुश्बू उन लोगों ने कभी न पाई थी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि जाओ उस की त़रफ़ जो मैं ने तुम्हारे लिये इ़ज़्ज़त तय्यार कर रखी है, जो चाहो लो, फिर लोग एक बाज़ार में जाएंगे जिसे मलाएका घेरे हुए हैं। उस में वोह चीज़ें होंगी कि उन की मिस्ल न आंखों ने देखी न कानों ने सुनी और न ही क़ुलूब पर उन का ख़त़रा गुज़रा। उस में से जो चीज़ चाहेंगे उन के साथ कर दी जाएगी और ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी, जन्नती उस बाज़ार में बाहम मिलेंगे। छोटे मर्तबे वाला बड़े मर्तबे वाले

www.dawateislami.net

को देखेगा उस का लिबास पसन्द करेगा, हुनूज़ या'नी अभी गुफ़्त-गू ख़त्म भी न होगी कि ख़याल करेगा कि मेरा लिबास इस से अच्छा है और येह इस वज्ह से है कि **जन्नत में किसी के लिये ग़म नहीं।** फिर वहां से अपने अपने मकानों को वापस आएंगे। उन की **बीबियां (बीवियां) इस्तिक़्बाल करेंगी,** मुबारक बाद दे कर कहेंगी कि आप वापस हुए और आप का जमाल उस से बहुत ज़ाइद है कि हमारे पास से आप गए थे, जवाब देंगे कि परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर हमें बैठना नसीब हुवा तो हमें ऐसा ही हो जाना सज़ावार था। जन्नती बाहम मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा और एक रिवायत में है कि उन के पास निहायत **आ'ला द-रजे की सुवारियां** और घोड़े लाए जाएंगे और उन पर सुवार हो कर जहां चाहेंगे, जाएंगे। सब से कम द-रजे का जो जन्नती है, उस के बाग़ात और बीबियां और नईम व ख़ुद्दाम और तख़्त हज़ार (1000) बरस की मसाफ़त तक होंगे और उन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब में मुअ़ज़्ज़ज़ वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के वज्हे करीम के दीदार से हर सुब्हो शाम मुशर्रफ़ होगा। जब जन्नती **जन्नत** में जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से फ़रमाएगा : "कुछ और चाहते हो जो तुम को दूं?" अ़र्ज़ करेंगे : तूने हमारे मुंह रोशन किये, **जन्नत** में दाख़िल किया, जहन्नम से नजात दी, उस वक़्त पर्दा कि मख़्लूक़ पर था, उठ जाएगा तो **दीदारे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **से बढ़ कर उन्हें कोई चीज़ न मिली होगी।**

(बहारे शरीअ़त तख़्रीज शुदा मक-त-बतुल मदीना, स. 82/86)

जन्नत में आक़ा का पड़ोसी बन जाए अ़त्तार इलाही
मौला अज़ पए क़ुत्बे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 123)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा अहले **जन्नत** और उन के सर सब्ज़ो शादाब पुर रौनक़ चेहरों पर ग़ौर कीजिये कि उन्हें ख़ुश्बूदार बन्द मोहर वाला मश्रूब पिलाया जाता है, **मोतियों के ख़ैमे** में सुर्ख़ याक़ूत के मिम्बरों पर बैठे ताज़ा सफ़ेद खजूरें सामने रखी हुई हैं, इन्तिहाई सब्ज़ फ़र्श बिछे हैं, मस्नदों पर तक्या लगाए हैं, जो नहरों के कनारे बिछाए गए हैं, **शराबे तहूर** और शहद हाज़िर हैं, ग़ुलाम और नोकर हाज़िर हैं, **ख़ूब सूरत हूरें** मौजूद हैं, गोया वोह याक़ूत व मरजान की बनी हुई हैं, जिन को कभी किसी इन्सान और जिन्न ने नहीं छुवा, बाग़ात के द-रजात में चल रही हैं, जिन पर **सफ़ेद रेशम का लिबास** है कि आंखें ख़ीरा हो जाएं, सब के सर पर ताज हैं, उन पर मोती और मरजान जड़े हैं, ख़ूब सूरत काजल लगी आंखें मुअ़त्तर और बुढ़ापे व तंगी से महफ़ूज़, ख़ैमों में बन्द और वोह ख़ैमे याक़ूत के महल्लात में हैं, जो **जन्नत** के बाग़ों के दरमियान हैं, पाक दिल व पाक नज़र औरतें हैं, फिर इन जन्नती मर्दों और हूरों के सामने पियाले और बरतन पेश किये जाते हैं (जिन में **जन्नत** के उ़म्दा मश्रूबात हैं) पीने वालों के लिये लज़ीज़ सफ़ेद मश्रूब का गिलास पेश होता है। इन की ख़िदमत पर ख़ुद्दाम व ग़िल्मान (बच्चे) हाज़िर रहते हैं जैसे कि क़ीमती महफ़ूज़ मोती हों। येह सब उन के नेक आ'माल का अज्र है, वोह बाग़ात में पुर अम्न मक़ाम में होंगे, बाग़ात में चश्मे और नहरें होंगी। बेहतरीन मक़ाम पर अपने मालिक क़ादिर करीम عَزَّوَجَلَّ का दीदार होगा और उन के चेहरों पर ताज़गी और रौनक़े ने'मत झलक्ती होगी। उन पर कोई तंगी और परेशानी न होगी बल्कि वोह मुकर्रम बन्दे होंगे। रब तआ़ला के दरबार से तहाइफ़ से सरफ़राज़ होंगे। उस में उन के लिये हर वोह चीज़ होगी, जो वोह चाहेंगे। हमेशा रहेंगे, उस में कोई ग़म और न कोई

www.dawateislami.net

ख़त़रा होगा । हर शक से महफ़ूज़ होंगे, ने'मतों से मु-तमत्तेअ़ या'नी फ़ाएदा उठाते होंगे । वहां खाना खाएंगे और **जन्नत** की नहरों से दूध, शराबे त़हूर, शहद और ताज़ा पानी पियेंगे । **जन्नत की सर ज़मीन** चांदी की होगी और उस के कंकर मरजान के होंगे और मुश्क की मिट्टी होगी । उस के पौदे ज़ा'फ़रान के होंगे । फूलों की ख़ुश्बू वाला पानी बादलों से बरसेगा, काफ़ूर के टीले होंगे । चांदी के पियाले ह़ाज़िर होंगे, जिन पर मोती, याक़ूत और मरजान का जड़ाव होगा, एक पियाला वोह होगा जिस में ख़ुश्बूदार मोहर लगा हुवा मश्रूब होगा, जिस में सल-सबील शीरीं चश्मे का पानी मिला होगा । एक ऐसा पियाला होगा कि उस के जौहर की सफ़ाई के बाइ़स सब त़रफ़ रोशनी हो जाएगी और उस में शराबे त़हूर ख़ूब सुर्ख़ और बेहतरीन होगी, जो इन्सान नहीं बना सकता, चाहे जिस क़दर सन्अ़त और कारीगरी दिखा ले, येह पियाला एक ख़ादिम के हाथ में होगा, इस की रोशनी मशरिक़ तक जाएगी मगर सूरज में वोह ख़ूब सूरती व ज़ीनत कहां ?

उस आदमी पर तअ़ज्जुब है जो ईमान रखता है कि **जन्नत** वाक़ेई ऐसा घर है मगर फिर उस का अह्ल बनने के लिये (अ़मल नहीं करता) और न **जन्नती** की मौत मरता है और अहले **जन्नत** की सी मेह़नत नहीं उठाता और न ही अहले **जन्नत** के कारनामों पर नज़र रखता है । तअ़ज्जुब है कि येह आदमी इस घर पर कैसे मुत़्मइन हो बैठता है जिस की बरबादी का फ़ैसला **अल्लाह** तआ़ला कर चुका है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **जन्नत** में सिर्फ़ बदन की सलामती होती और मौत, भूक, प्यास और तमाम ह़वादिस से ही बचाव होता, तो भी इस क़ाबिल था कि उस की ख़ात़िर दुन्या को मुस्तरद कर दिया जाता और उस पर इस दुन्याए तंग को तरजीह़ न दी जाती और अब जब कि **अहले जन्नत मामून**

www.dawateislami.net

बादशाह हैं, हर त़रह़ की मसर्रतों से मुस्तफ़ीद हैं, जो चाहते हैं ह़ासिल करते हैं। अ़र्श के आंगन में हर रोज़ ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का दीदार** करते हैं। **अल्लाह** तआ़ला के दीदार में वोह कुछ ह़ासिल करते हैं, जो **जन्नत** की ने'मत से ह़ासिल नहीं और दूसरी किसी त़रफ़ मु-तवज्जेह नहीं होते, हर वक़्त त़रह़ त़रह़ की ने'मतों के छिन जाने से बिल्कुल मह़फ़ूज़ व मामून हैं और हर त़रह़ की ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं। अब ऐसी **जन्नत** की त़रफ़ इन्सान का क्यूं ध्यान नहीं होता।

(مکاشفۃ القلوب، ص ۵۵۰/۵۵۲)

कर दे जन्नत में तू जवार उन का
अपने अ़त्तार को अ़त़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 81)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आह कौन ग़ौर करे !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर **ह़ैरत बालाए ह़ैरत** है कि अगर हमारा कोई पड़ोसी या अ़ज़ीज़ बुलन्दो बाला कोठी तय्यार कर ले या बेहतरीन कार (CAR) ख़रीदे या किसी भी सूरत से अपनी दुन्यावी आसाइश का मे'यार बुलन्द करे तो हम फ़ौरन उस से आगे बढ़ने की जुस्त-जू में मगन हो जाते हैं, एक धुन सी लग जाती है और बसा अवक़ात तो ह़सद के बाइ़स ज़िन्दगी परेशान हो जाती है। लेकिन हाए अफ़्सोस ! कि हम मुत्तक़ी व परहेज़ गार बन्दों को देख कर येह तमन्ना क्यूं नहीं करते कि जिस त़रह़ येह इस्लामी भाई **जन्नत के द-रजों की बुलन्दी** की त़रफ़ बढ़ रहा है, मैं भी इसी त़रह़ कोशिश करूं, मैं भी नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बनूं, तिलावत करूं, सुन्नतों का पैकर बनूं,

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िलों का पाबन्द बनूं, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूं और दीगर म-दनी कामों में शिर्कत की ब-र-कतें ह़ासिल करूं वग़ैरा।

मत लगा तू दिल यहां पछताएगा
किस त़रह़ जन्नत में भाई जाएगा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 710)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ ज़ाहिरी इ़बादात व हुस्ने अख़्लाक़ के ए'तिबार से लोगों को मुख़्तलिफ़ द-रजों में मुन्क़सिम या'नी तक़्सीम किया जाता है इसी त़रह़ अज्रो सवाब के द-रजों की भी तक़्सीम है लिहाज़ा अगर हम सब से **आ'ला द-रजा** ह़ासिल करने की तमन्ना रखते हैं तो इस के लिये भरपूर कोशिश करनी होगी। चुनान्चे पारह 4 **सू-रतुल आले इमरान** की आयत नम्बर 133 में इर्शाद होता है :

وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं, परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है।

"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "दौड़ो" से मुराद तौबा, अदाए फ़राइज़ व त़ाआ़त व इख़्लास वाले अ़मल इख़्तियार कर के (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों से तौबा करते हुए,

www.dawateislami.net

फ़राइज़ म-सलन नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा और दीगर अह़कामाते शरइ़य्या पर इख़्लास के साथ अ़मल के ज़रीए़ रब عَزَّوَجَلَّ की बख़्शिश और **जन्नत की त़रफ़ दौड़ो** कि येह रास्ते **जन्नत** की त़रफ़ ले जाते हैं)

जन्नत ईमानदार, नेक आ'माल वालों के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जन्नत एक मकान है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान वालों के लिये बनाया है। उस में वोह ने'मतें मुहय्या की हैं जिन को आंखों ने देखा न कानों ने सुना और न ही किसी आदमी के दिल पर इस का ख़त़रा गुज़रा। **दुन्या की आ'ला से आ'ला शै को जन्नत की किसी चीज़ से कोई मुना-स-बत नहीं।** जन्नत ईमानदार, नेक आ'माल वालों के लिये है, पारह 5 **सू-रतुन्निसाअ** आयत 124 में इर्शाद होता है :

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औ़रत और हो मुसल्मान तो वोह **जन्नत** में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा।

जन्नत वाले ही काम्याब हैं

पारह 28 **सू-रतुल ह़श्र** आयत 20 में इर्शाद होता है :

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे।

www.dawateislami.net

जन्नत क़ल्बे सलीम वालों के लिये है

पारह 19 **सू-रतुश्शु-अ़रा** आयत 88, 89, 90 में इर्शाद होता है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾
اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾
وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۹۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के लिये।

मोतियों का महल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, ताजदारे ह़रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के बारे में सुवाल किया गया, पारह 28, **सू-रतुस्सफ़** आयत 12

وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में हैं।

तो इर्शाद फ़रमाया कि "**जन्नत** में मोतियों का एक महल है जिस में सुर्ख़ याक़ूत से बने हुए सत्तर (70) मकान हैं, हर मकान में सब्ज़ ज़ुमुर्रद या'नी क़ीमती सब्ज़ पथ्थर के सत्तर (70) कमरे हैं, हर कमरे में सत्तर (70) तख़्त हैं, हर तख़्त पर हर रंग के सत्तर (70) बिछोने हैं, हर बिछोने पर एक औ़रत है, हर कमरे में सत्तर (70) दस्तर ख़्वान हैं, हर दस्तर ख़्वान पर अन्वाओ़ अक़्साम के सत्तर (70) खाने हैं, हर कमरे में सत्तर (70) ख़ादिम और ख़ादिमाएं हैं। मोमिन को इतनी क़ुव्वत अ़त़ा की जाएगी कि वोह एक दिन में उन सब से जिमाअ़ कर सकेगा।

(الترغیب والترھیب، کتاب صفة الجنة، باب الترغیب فی الجنة.. الخ حدیث ٤١، ج ٤، ص ٢٨٥)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अन्दाज़ा लगाइये कि उस मोतियों के मुक़द्दस जन्नती महल में सब्ज़ ज़ुमुर्रद के कितने कमरे, तख़्त, ख़ुद्दाम, दस्तर ख़्वान, बिछोने, जन्नती औरतें और कितने ही रंगों के खाने होंगे فَسُبْحَانَ مَنْ لَّا يُحْصٰى فَضْلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ عَطَاؤُهٗ या'नी पाकी है उस ज़ात को जिस के फ़ज़्ल की इन्तिहा नहीं और जिस की अ़ता में कमी नहीं।

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(हदाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! मैं आप की बारगह में चन्द और **जन्नत** में ले जाने वाले आ'माल का ज़िक्रे ख़ैर करता हूं। इन्हें मुला-हज़ा फ़रमाइये और इन की बजा आ-वरी कर के **जन्नत की तय्यारी** कीजिये।

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल[1]

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

पारह 27 **सू-रतुर्रहमान** आयत 46 में ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो **जन्नतें** हैं।

1 : इस उ़न्वान पर 2000 मुस्तनद अहादीस का मज्मूआ़ "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" नामी किताब मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ख़रीद फ़रमाएं जिसे मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वत इस्लामी) ने पेश किया है।

www.dawateislami.net

इस आयत की तफ़्सीर बयान करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में लिखते हैं : या'नी जिसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ में ह़िसाब के लिये खड़े होने का डर हो और वोह मआ़सी तर्क करे और फ़राइज़ बजा लाए, उस के लिये **दो जन्नतें** हैं : (1) जन्नते अ़दन (2) जन्नते नईम और येह भी कहा गया है कि एक **जन्नत** रब عَزَّوَجَلَّ से डरने का सिला और एक शहवात तर्क करने का सिला।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सू-रतुन्निसाअ में इर्शाद होता है :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ (پ ٥ سُوْرَةُ النِّسَآء آيت ٦٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى (अल मु-तवफ़्फ़ा 1367 हि.) इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करते हुए लिखते हैं :

ह़ज़रते सौबान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कमाल मह़ब्बत रखते थे जुदाई की ताब न थी एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रन्जीदा ह़ाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदल गया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया : आज रंग क्यूं बदला हुवा है ? अ़र्ज़ किया : न मुझे कोई

www.dawateislami.net

बीमारी है न दर्द बजुज़ इस के कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो इन्तिहा द-रजे की वह्शत व परेशानी हो जाती है जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस त़रह़ दीदार पा सकूंगा आप आ'ला तरीन मक़ाम में होंगे मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आ़ली तक रसाई कहां ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन्हें तस्कीन दी गई कि बा वुजूद फ़र्क़े मनाज़िल के फ़रमां बरदारों को बारयाबी और मइय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मालिके ख़ुल्दो कौसर, शाहे बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّنِیْ كَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ या'नी मुझ से मह़ब्बत करने वाला **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (الشفاء ج۲ص۲۰)

पड़ोसी ख़ुल्द में अ़त्तार को अपना बना लीजे
जहां हैं इतने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 341)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शिफ़ा शरीफ़, जिल्द 2, सफ़ह़ा 24 पर है कि जो शख़्स जिस से मह़ब्बत रखता है वोह उसी की मुवा-फ़क़त या'नी मुत़ा-बक़त करता है वरना वोह उस की मह़ब्बत में सादिक़ या'नी सच्चा नहीं । लिहाज़ा प्यारे आक़ा, बज़्मे **जन्नत** के दूल्हा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में वोह सच्चा है जिस पर इस की अ़लामतें ज़ाहिर हों । इस की पहली अ़लामत क़ुरआन ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी बयान की । चुनान्चे पारह 3 **सूरए आले इमरान**, आयत 31 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

उसी अहमद रज़ा का वासिता जो मेरे मुर्शिद हैं
अता कर दो मुझे अपनी महब्बत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 330)

महब्बते सहाबा (عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان)

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है इन्हों ने फ़रमाया कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बा'द हज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की पैरवी करो। और मज़ीद रिवायत में है कि मेरे सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم सितारों की मिस्ल हैं। इन में से जिस की भी पैरवी करोगे तुम राहयाब हो जाओगे।

सरकारे नामदार, दो जहां के ताजदार, महबूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने मेरे सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बारे में मेरी नसीहत की हिफ़ाज़त की तो मैं बरोज़े क़ियामत उस का मुहाफ़िज़ होउंगा और फ़रमाया वोह मेरे पास हौज़े कौसर पर आएगा।

(شِفاء شریف، ج ۲، ص ۵۵)

सिद्दीक़ो उ़मर दोनों भेजेंगे ग़ुलामों को
जिस वक़्त खुलेगा दर मौला तेरी जन्नत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इल्मे दीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क़ियामत के दिन **आ़लिम** और **इबादत गुज़ार** को उठाया जाएगा तो आ़बिद से कहा जाएगा कि **जन्नत** में दाख़िल हो जाओ जब कि **आ़लिम से कहा जाएगा कि जब तक लोगों की शफ़ाअ़त न कर लो ठहरे रहो ।**"

(الترغیب و الترھیب ، کتاب العلم ،الترغیب فی العلم،حدیث ٣٤ ،ج ١، ص ٥٧)

कल नारे जहन्नम से ह़सन अम्नो अमां हो
उस मालिके फ़िरदौस पे सदक़े हों जो हम आज

(عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़ज़ाइले उ़-लमा के पेशे नज़र इन की ख़िदमत की तरग़ीब दिलाते हुए **म-दनी इन्आ़म नम्बर 62** में फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस माह किसी सुन्नी आ़लिम (या इमामे मस्जिद, मुअज़्ज़िन, ख़ादिम) को 112 रुपै या कम अज़ कम 12 रुपै तोह़फ़तन पेश किये ? (ना बालिग़ अपनी ज़ाती रक़म से नहीं दे सकता)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ब-रकाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत, पैकरे इल्मो ह़िक्मत, आ़लिमे शरीअ़त, शैख़े त़रीक़त, आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, माहताबे र-ज़विय्यत, साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे मिल्लत, मुसन्निफ़े फ़ैज़ाने सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई

www.dawateislami.net

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ब-र-कतों से कौन वाक़िफ़ नहीं, न जाने कितनों की ज़िन्दगियों में आप की ब-र-कत से म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मए हुब्बे दुन्या की मस्ती में सरशार, फ़िक्रे आख़िरत में बे क़रार हो गए। हर वक़्त मालो दौलत को बढ़ाने के सुहाने सपने देखने वाले बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ से इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत की दुआ़एं मांगने लगे। नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर ज़कात व उ़श्र की अदाएगी में बुख़्ल व कन्जूसी करने वाले, ब ख़ुशी ज़कात व उ़श्र अदा करने और ग़रीबों, मिस्कीनों, रिश्तेदारों को नवाज़ने के साथ साथ अपना माल मसाजिद, जामिआ़त व मदारिस की ता'मीर और दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये दिल खोल कर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने लगे। लन्दनो पेरिस जाने के आरज़ू मन्द, मक्का व मदीना की ज़ियारत की ह़सरत में तड़पने लगे। बे धड़क हर वक़्त क़ह़क़ह़े लगाने वाले, ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आंसू बहाने लगे। सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम की बड़ी बड़ी डिग्रियों के लिये बे क़रार व दिल फ़िग़ार, ज़ाती मुत़ा-लआ़ आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और दा'वते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना के ज़रीए़ उख़्रवी और दीनी उ़लूम के त़लब गार बनने लगे। नाविल, डायजस्ट और अख़्लाक़ को बिगाड़ने वाली उलटी सीधी रूमानी कहानियां और अफ़्साने पढ़ने वाले, **''फ़ैज़ाने सुन्नत''**, **''रसाइले अ़त्तारिय्या''**, **''बहारे शरीअ़त''**, **''फ़तावा र-ज़विय्या''** और **''कन्ज़ुल ईमान''** से बमअ़ तरजमा व तफ़्सीर तिलावत करने लगे। हर वक़्त गाने गुन-गुनाने वाले, ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लब हिलाने लगे, दुन्यवी मफ़ादात और गन्दी ज़ेहनिय्यत के साथ दोस्तियां करने वाले, अच्छी अच्छी

www.dawateislami.net

निय्यात के साथ हर एक पर नेकी की ख़ातिर इन्फ़िरादी कोशिश करने लगे। बात बात पर झगड़ा करने, ख़ून बहाने और रिश्तेदारियां काटने वाले, पेशगी मुआ़फ़ और सुल्ह़ में पहल करने लगे। ना महरम अजनबी औ़रतों से हंसी मज़ाक़ और बे तकल्लुफ़ी करने वाले, शर-ई पर्दे की सआ़दत पाने लगे, तफ़रीह़ गाहों और मुख़्तलिफ़ शहरों की फ़ुज़ूल सैरो सियाह़त के शौक़ीन म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनने लगे। मां बाप का दिल दुखाने वाले, ख़िदमते वालिदैन और इन की दस्त व पा बोसी की ब-रकात पाने लगे। यहूदो नसारा की नक़्ल करने वाले नादान **इत्तिबाए़ सुन्नते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **में चेहरों पर दाढ़ी, बदन पर म-दनी लिबास, सर पर ज़ुल्फ़ें और इमामा शरीफ़ का म-दनी ताज सजाने लगे। मुआ़-शरे के बद किरदार व बद गुफ़्तार सु-ननेशहे अबरार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के आईना दार बनने लगे।**

औलाद को पक्का दुन्यादार बनाने वाले, अपने बच्चों को दा'वते इस्लामी के मद्र-सतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा कर ह़ाफ़िज़ व आ़लिम व मुबल्लिग़ बनाने लगे। बे पर्दा व बे अ़मल नादान बहनें, बा पर्दा व बा अ़मल हो कर मुअ़ल्लिमा, मुदर्रिसा, मुबल्लिग़ा बनीं और इन के जा बजा बा पर्दा इज्तिमाआ़त होने लगे। बे नमाज़ी न सिर्फ़ नमाज़ी बल्कि क़ारी और इमाम व ख़त़ीब बनने लगे। ख़ुश्क मिज़ाज, लज़्ज़ते इ़श्क़ और फ़ासिक़, तक़्वा व परहेज़ गारी बल्कि कुफ़्फ़ार तक ने'मते इस्लाम पाने लगे। वाह क्या बात है अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम पर भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ऐसी सीधी और मीठी नज़र पड़ जाए कि हम न सिर्फ़ नेक बल्कि नेक बनाने का म-दनी जज़्बा पा जाएं।

www.dawateislami.net

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही
पढ़ूं सुन्नते क़ब्लिया वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही
दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही
हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा
मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही
गुसीले मिज़ाज और तमस्ख़ुर की ख़स्लत
से मुझ को बचा ले बचा या इलाही
न नेकी की दा'वत में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही
सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत
की रोज़ाना दो मर्तबा या इलाही
मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं
चटाई का हो बिस्तरा या इलाही
है आ़लिम की ख़िदमत यक़ीनन सआ़दत
हो तौफ़ीक़ इस की अ़ता या इलाही
सदाए मदीना दूं रोज़ाना सदक़ा
अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही
मैं नीची निगाहें रखूं काश ! हर दम
अ़ता कर दे शर्मो ह़या या इलाही
हमेशा करूं काश ! पर्दे में पर्दा
तू पैकर ह़या का बना या इलाही
लिबास सुन्नतों से मुज़य्यन रहे और
इमामा हो सर पर सजा या इलाही
सभी रुख़ पे इक मुश्त दाढ़ी सजाएं
बनें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही
हर इक म-दनी इन्आ़म सगे अ़त्तार पाए
करम कर पए मुस्त़फ़ा या इलाही

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर आप वाक़ेई नेक बनना चाहते हैं.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप वाक़ेई **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार और सच्चे आ़शिक़े रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नेक व इबादत गुज़ार और बा अ़मल मुसल्मान बनना चाहते हैं तो फिर हिम्मत कर के शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़ता कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** अपना लीजिये, येह गुनाहों के मरज़ से शिफ़ा पाने और नेक बनने का म-दनी नुस्ख़ा है ।

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मुझे म-दनी इन्आ़मात से प्यार है। फ़रमाते हैं : अगर आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर ब समीमे क़ल्ब इन को क़बूल कर के इन पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो आप जीते जी बहुत जल्द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें देख लेंगे। आप को اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुकूने क़ल्ब नसीब होगा। बातिन की सफ़ाई होगी। ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सौते आप के क़ल्ब से फूटेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी का म-दनी काम हैरत अंगेज़ ह़द तक बढ़ जाएगा। चूंकि म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है लिहाज़ा शैत़ान आप को बहुत सुस्ती दिलाएगा, त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने सुझाएगा। आप का दिल नहीं लग पाएगा मगर आप हिम्मत मत हारियेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल भी लग ही जाएगा।

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है दिल को भी आराम हो ही जाएगा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमारे ख़ैर ख़्वाह हैं। आप ने हमें जो येह एक अ़ज़ीमुश्शान म-दनी नुस्ख़ा बनाम "म-दनी इन्आ़मात" अ़त़ा फ़रमाया है। इस पर अ़मल पैरा हो कर हम अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ का अ़ज़ीम जज़्बा पा सकते हैं। येह म-दनी इन्आ़मात का तोह़फ़ा हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰه की याद ताज़ा करता है। इस के ज़रीए हम ख़ुद-एह़तिसाबी का म-दनी जज़्बा पा सकते हैं, ख़ल्वत में म-दनी इन्आ़मात के रिसाले को खोल कर इस में दर्ज शुदा सुवाल के जवाब में ख़ुद ही हां (✓) या ना (0) के ज़रीए अपनी कारकर्दगी या कोताही का जाएज़ा ले सकते हैं। गोया येह म-दनी इन्आ़मात हमें रोज़ाना अपनी ही लगाई हुई ख़ुद-एह़तिसाबी की अ़दालत में

www.dawateislami.net

हाज़िर कर के हमारे अपने ही ज़मीर से फ़ैसला करवाते और हमारी इस्लाह् का सामान मुहय्या करते हैं। येह म-दनी इन्आ़मात जन्नत में ले जाने वाले और जहन्नम से बचाने वाले आ'माल का मज्मूआ़ हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद को दुर्रा मार कर पूछते बता तू ने आज क्या अ़मल किया ? इसी त़रह़ और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن भी ह़स्बे ह़ाल ख़ुद-एह़तिसाबी करते और बुलन्दिये द-रजात का एहतिमाम फ़रमाते।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमारी बदह़ाली मुला-ह़ज़ा फ़रमाते हुए हमें म-दनी इन्आ़मात का अ़ज़ीम म-दनी तोह़फ़ा अ़त़ा फ़रमाया है ताकि हम रोज़ाना वक़्त मुक़र्रर कर के फ़िक्रे मदीना (ख़ुद एह़तिसाबी) पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करें, गुनाहों से बचें और नेक बनें। आइये ! म-दनी इन्आ़मात की बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और रोज़ फ़िक्रे मदीना की निय्यत कीजिये चुनान्चे

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सूबा बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रसालत मआब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो म-दनी क़ाफ़िले**

www.dawateislami.net

में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।''

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लय-लतुल क़द्र, जि. 1, स. 931)

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्तफ़ा
है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक आ'माल के लिये कमर बस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम ने वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल की तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम नेक बन जाएंगे। नेकों पर रब جَلَّ جَلَالُهٗ की ख़ूब करम नवाज़ियां, मेहरबानियां और ह़ौसला अफ़्ज़ाइयां होती हैं। **अल्लाहु अक्बर !** जब नेक व मुत्तक़ी शख़्स दुन्या से रुख़्सत होता है **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला के मा'सूम फ़िरिश्ते उसे क्या बिशारत सुनाते हैं मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये इख़्लास के साथ नेक आ'माल की बजा आ-वरी के लिये कमर बस्ता हो जाइये। चुनान्चे पारह 30 **सू-रतुल फ़ज्र** की आयत नम्बर 27, 28, 29, 30 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿۲۹﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿۳۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ इत्मीनान वाली जान अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।

इत़ाअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदारों को जन्नत में दाख़िले के वक़्त क्या कहा जाएगा, मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और ईमान ताज़ा कीजिये चुनान्चे 29 **सू-रतुद्दह्र** आयत 22 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۲۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी।

बरोज़े क़ियामत जब कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार, ब हुक्मे जब्बारो क़ह्हार جَلَّ جَلَالُهٗ दाख़िले नार होंगे तो नेकोकार और अबरार या'नी नेक आ'माल की बजा आ-वरी करने वाले गुरौह दर गुरौह **जन्नत** के गुलज़ार में दाख़िल किये जाएंगे चुनान्चे पारह 24 **सू-रतुज़्ज़ुमर** आयत 73, 74 में इर्शाद होता है :

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरते थे उन की सुवारियां गुरौह गुरौह जन्नत की त़रफ़ चलाई जाएंगी यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे और उस के दरवाज़े खुले हुए होंगे। और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने। और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया। और हमें इस ज़मीन का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें। जहां चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों (अच्छे काम करने वालों) का।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इल्मे दीन की जुस्त-जू

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **सरवरे हर दो सरा, महबूबे किब्रिया** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते

www.dawateislami.net

हुए सुना कि "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इल्म की जुस्त-जू में निकलता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये **जन्नत** का एक दरवाज़ा खोल देता है और फ़िरिश्ते उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं और आस्मानों के फ़िरिश्ते और समुन्दर की मछलियां उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करती हैं और आ़लिम को आ़बिद पर इतनी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जितनी चौदहवीं रात के चांद को आस्मान के सब से छोटे सितारे पर और उ़-लमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं। बेशक अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह नुफ़ूसे कुदसिय्या عَلَيْهِمُ السَّلَام तो इल्म का वारिस बनाते हैं लिहाज़ा जिस ने इल्म ह़ासिल किया उस ने अपना ह़िस्सा ले लिया और आ़लिम की मौत एक ऐसी आफ़त है जिस का इज़ाला नहीं हो सकता और एक ऐसा ख़ला है जिसे पुर नहीं किया जा सकता (गोया कि) वोह एक सितारा था जो मांद पड़ गया, एक क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से ज़ियादा आसान है।"

(بیهقی شعب الایمان ، با ب فی طلب العلم ، حدیث ۱۶۹۹، ج ۲ ،ص ۲۶۳)

पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बना लो
करम आक़ा पए अह़मद रज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 309)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी क़ाफ़िलों की पाबन्दी के साथ साथ जब हम वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करते हुए म-दनी इन्आ़मात के पाबन्द बनेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें भी **इल्मे दीन की जुस्त-जू का म-दनी जज़्बा** ह़ासिल होगा और हम भी **जन्नत** में ले जाने वाले आ'माल की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाएंगे चुनान्चे पैकरे इल्मो ह़िक्मत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 68** में फ़रमाते हैं। क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार

www.dawateislami.net

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की आख़िरी तस्नीफ़ "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" से तौबा, इख़्लास, तक़्वा, ख़ौफ़ व रजा, उ़ज्ब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की हिफ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ? इसी त़रह़ **म-दनी इन्आ़म नम्बर 69** में भी इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 9 से मुरतद का बयान हिस्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा, हिस्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के हुक़ूक़ का बयान (अगर शादी शुदा हैं तो) हिस्सा 7 से मुह़र्रमात का बयान और हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन हिस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

झगड़ा तर्क करना

ह़ज़रते सय्युदना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो बात़िल झूट बोलना छोड़ दे, उस के लिये **जन्नत** के कनारे पर एक घर बनाया जाएगा और जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ना छोड़ देगा, उस के लिये **जन्नत** के वस्त़ में एक घर बनाया जाएगा और जिस का अख़्लाक़ अच्छा होगा, उस के लिये **जन्नत के आ'ला मक़ाम में एक घर बनाया जाएगा ।**"

(سنن ترمذی ، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی المراء ، حدیث ۲۰۰۰ ، ج ۳ ، ص ٤٠٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, माहताबे र-ज़विय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमें लड़ाई झगड़ों वाले उमूर से बचा कर **राहे जन्नत** पर गामज़न करने की सअ़ूय करते हुए

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात में फ़रमाते हैं : **म-दनी इन्आ़म नम्बर 26 :** किसी ज़िम्मादार (या आ़म इस्लामी भाई से) बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह़ की ज़रूरत महसूस हो तो तह़रीरी तौ़र पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज़्हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ? (हां ख़ुद समझाने की जुर्अत न हो या नाकामी की सूरत में **तन्ज़ीमी तरकीब** के मुत़ाबिक़ मस्अला ह़ल करने में मुज़ा-यक़ा नहीं)

म-दनी इन्आ़म नम्बर 33 में फ़रमाते हैं : आज आप ने (घर में और बाहर) किसी पर **तोहमत** तो नहीं लगाई, किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ा ? किसी से **गाली गलोच** तो नहीं की ? (किसी को सुवर, गधा, चोर, लम्बू, ठिंगू वग़ैरा न कहा करें)

म-दनी इन्आ़म नम्बर 7 : क्या आज आप ने (घर में और बाहर भी) हर छोटे बड़े ह़त्ता कि वालिदा (और अगर हैं तो अपने बच्चों और उन की अम्मी) को भी **तू** कह कर **मुख़ात़ब** किया या **आप** कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ़्त-गू **हैं** कह कर बात की या **जी** कह कर ? (आप कहना, जी कहना दुरुस्त जवाब है)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़लाल खाना और सुन्नत अपनाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने **ह़लाल खाया** और **सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया** और **लोग उस के शर से महफ़ूज़ रहे** तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा ।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया "**या**

www.dawateislami.net

रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में बहुत हैं।'' तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़न्क़रीब मेरे बा'द बहुत से ज़मानों में होंगे ।

(المستدرك للحاكم ، كتاب الاطعمة ، ذكر معيشة النبى ،حديث ٧١٥٥،ج ٥ ص ١٤٢)

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का

ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت, स. 32)

ऐ काश ! ह़लाल खाने, सुन्नतें अपनाने के साथ साथ हम लोगों का दिल दुखाने से भी बचे रहें चुनान्चे आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 48** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने (घर में और बाहर) **मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़, दिल आज़ारी और क़ह्क़ह़ा** लगाने (या'नी खिलखिला कर हंसने) से ह़त्तल इम्कान बचने की कोशिश की ? (**याद रखिये !** किसी मुसल्मान का दिल दुखाना कबीरा गुनाह है)

म-दनी इन्आ़म नम्बर 50 : क्या आज आप का सारा दिन (नोकरी या दुकान वग़ैरा पर नीज़ घर के अन्दर भी) **इमामा शरीफ़** (और तेल लगाने की सूरत में सरबन्द भी) **ज़ुल्फ़ें** (अगर बढ़ती हों तो) एक मुश्त **दाढ़ी** सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक (सफ़ेद) **कुर्ता** सामने जेब में नुमायां **मिस्वाक** और टख़्नों से **ऊंचे पाइंचे** रखने का मा'मूल रहा ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मैं ने दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

को फ़रमाते हुए सुना कि "**जन्नत में मोमिन का ज़ेवर वहां तक होगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है ।**" (صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ ، باب تبلغ الحلیۃ حیث یبلغ الوضوء، حدیث ۲۵۰ ، ص ۱۵۱) इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में है कि मैं ने सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना "**जन्नत में आ'ज़ाए वुज़ू तक ज़ेवर होंगे ।**" (ابن خزیمہ ،باب اسحاب .....الخ،الحدیث۷،ج۱،ص۷)

पड़ोसी ख़ुल्द में अ़त्तार को अपना बना लीजे
जहां हैं इतने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 341)

पाबन्दे सौमो सलात व सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **म-दनी इन्आ़म नम्बर 39** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ह़त्तल इम्कान दिन का अक्सर ह़िस्सा **बा वुज़ू** रहे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़ फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की आ़दत बनाने की सआ़दत पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत से मा'मूर म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें हैं । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल तख़रीज शुदा" के बाब "**फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**" सफ़ह़ा 124 पर लखते हैं :

म-दनी क़ाफ़िले पर सरकार ﷺ की करम नवाज़ी

एक आ़शिक़े रसूल के बयान का अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है, हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** सुन्नतों की तरबियत

www.dawateislami.net

लेने के लिये हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से सूबए सरहद पहुंचा। एक मस्जिद में तीन दिन गुज़ार कर दूसरे अ़लाक़े की त़रफ़ जाते हुए रास्ता भूल कर हम जंगल की त़रफ़ जा निकले, रात की सियाही हर त़रफ़ फैल चुकी थी, दूर दूर तक आबादी का कोई नामो निशान नहीं था, लम्ह़ा ब लम्ह़ा तश्वीश में इज़ाफ़ा होता जा रहा था, इतने में उम्मीद की एक किरन फूटी और काफ़ी दूर एक बत्ती टिमटिमाती नज़र आई, ख़ुशी के मारे हम उस सम्त लपके मगर आह! चन्द ही लम्ह़ों के बा'द वोह रोशनी ग़ाइब हो गई, हम ठिठक कर खड़े के खड़े रह गए, हमारी घबराहट में एक दम इज़ाफ़ा हो गया! क्या करें, क्या न करें और किस सम्त को चलें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। आह! आह! आह!

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है सोने वालो! जागते रहियो चोरों की रखवाली है
जुगनू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के डर समझाए कोई पवन है या अगिया बेताली है
बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है
पाउं उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुंह मींह ने फिस्लन कर दी है और धुर तक खाई नाली है
साथी साथी कह के पुकारूं साथी हो तो जवाब आए फिर झुंझला कर सर दे पटकूं चल रे मौला वाली है
फिर फिर कर हर जानिब देखूं कोई आस न पास कहीं हां इक टूटी आस ने हारे जी से रफ़ाक़त पा ली है
तुम तो चांद अ़रब के हो प्यारे तुम तो अ़जम के सूरज हो देखो मुझ बेकस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 130/131)

इस परेशानी में न जाने कितना वक़्त गुज़र गया, यकायक उसी सम्त फिर रोशनी नुमूदार हुई। हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर हिम्मत की और एक बार फिर आबादी की उम्मीद पर रोशनी की जानिब तेज़ तेज़ क़दम चल पड़े। जब क़रीब पहुंचे तो एक शख़्स रोशनी लिये खड़ा था, वोह निहायत पुर तपाक त़रीक़े पर हम से मिला और हमें अपने मकान में ले

www.dawateislami.net

गया, आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले के बारह मुसाफ़िरों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ 12 कप मौजूद थे और चाय भी तय्यार। उस ने गर्म गर्म चाय के ज़रीए हमारी "ख़ैर ख़्वाही" की। हम इस ग़ैबी इमदाद और पूरे बारह कप चाय की पहले से तय्यारी पर ह़ैरान थे। इस्तिफ़्सार पर हमारे अजनबी मेज़बान ने इन्किशाफ़ किया कि मैं सोया हुवा था कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : "दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर रास्ता भूल गए हैं इन की रहनुमाई के लिये तुम रोशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ।"** मेरी आंख खुल गई और बत्ती ले कर बाहर निकल पड़ा। कुछ देर तक खड़ा रहा मगर कुछ नज़र न आया, वस्वसा आया कि शायद ग़लत़ फ़ह्मी हुई है, आंखों में नींद भरी हुई थी, घर में दाख़िल हो कर फिर सो रहा, सर की आंख बन्द होते ही दिल की आंख वापस खुल गई और फिर एक बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेह्रए नूरबार नज़र आया, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, **दीवाने ! म-दनी क़ाफ़िले में बारह मुसाफ़िर हैं, इन के लिये चाय का इन्तिज़ाम कर के फ़ौरन रोशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ।** मैं ने दम ज़दन में ख़ैर ख़्वाही की तरकीब की और रोशनी ले कर बाहर निकल आया कि इतने में आ़शिक़ाने रसूल का म-दनी क़ाफ़िला भी आ पहुंचा।

आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा — ख़ुद भीक दें और ख़ुद कहें मंगता का भला हो
तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत — है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िद हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

वुज़ू के बा'द की दुआ

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से जो शख़्स कामिल वुज़ू करे फिर येह कलिमा पढ़े : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. **तरजमा :** मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।" तो उस के लिये **जन्नत** के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, **जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए।** (صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، حدیث ۲۳٤، ص ۱٤٤)

हम ने माना कि गुनाहों की नहीं ह़द लेकिन
तू है उन का तो ह़सन तेरी है जन्नत तेरी

(ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसन्निफ़े फ़ैज़ाने सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के जद्वल ﴿उ़म्र भर में कम अज़ कम एक मर्तबा यक मुश्त बारह (12) माह, हर बारह माह में कम अज़ कम एक मर्तबा यक मुश्त एक माह और हर माह तीन (3) दिन﴾ के मुत़ाबिक़ **अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ का जज़्बा लिये** म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सलातो सुन्नत व इन्फ़िरादी कोशिश व दर्सो बयान की अ़-मली तरबियत, दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआन सीखने सिखाने की सआ़दत, अक्सर वक़्त क़ियामे मस्जिद और हमा वक़्त अच्छी सोह़बत की ब-र-कत, दुआ़ओं की क़बूलिय्यत और म-रज़े इस्यां से नजात व

www.dawateislami.net

बराअत वग़ैरा के साथ साथ **वुज़ू के बा'द की दुआ** और ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **बहुत सी मक़्बूल दुआएं** वग़ैरा याद करने की अ़ज़ीम सआ़दत भी ह़ासिल होगी चुनान्चे मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : **म-दनी इन्आ़म नम्बर 63 :** क्या आप ने बालिग़, ना बालिग़ व ना बालिग़ा के जनाज़े की दुआ़एं, छ (6) कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, तक्बीरे तश्रीक़ और तल्बिया (लब्बैक) येह सब तरजमे के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ को (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) येह सब पढ़ लिये ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तह़िय्यतुल वुज़ू

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक सुब्ह़ रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पुकारा फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! कौन सी चीज़ तुम्हें मुझ से पहले **जन्नत** में ले गई ? आज शब मैं **जन्नत** में दाख़िल हुवा तो मैं ने अपने आगे तुम्हारे क़दमों की आवाज़ सुनी।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं (वुज़ू करने के बा'द) **हमेशा दो रक्अ़तें** पढ़ कर अज़ान देता हूं और जब बे वुज़ू हो जाता हूं तो **फ़ौरन वुज़ू** कर लेता हूं।" तो रह़मते आ़लम, शहन्शाहे उमम, ताजदारे ह़रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "(**अच्छा**) **येही वज्ह है।**" (مسند احمد، حدیث بریدۃ الاسلمی، حدیث ۲۳۰۵۷، ج۹، ص ۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रसूल अ़ज़ीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स अह़सन त़रीक़े से **वुज़ू करे** और **दो रक्अ़तें** क़ल्बी तवज्जोह से अदा करे तो उस के लिये **जन्नत वाजिब हो जाएगी ।**"

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ ، باب ذکر المستحب عقب الوضوء، حدیث ۲۳٤، ص ۱٤٤)

बहुत कमज़ोर हूं हरगिज़ नहीं क़ाबिल अ़ज़ाबों के
ख़ुदारा साथ लेते जाना जन्नत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 332)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमें **जन्नत** की त़रफ़ ले जाने वाले आ'माल की तरग़ीब दिलाते रहते हैं चुनान्चे आप (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) **म-दनी इन्आ़म नम्बर 20** में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार **तह़िय्यतुल वुज़ू** और **तह़िय्यतुल मस्जिद** अदा फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ान व इक़ामत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी, अ़-रबी क़-रशी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**जो बारह (12) साल तक अज़ान देगा उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी और उस के अज़ान देने के बदले में उस के लिये रोज़ाना साठ (60) नेकियां और हर इक़ामत के इवज़ तीस (30) नेकियां लिखी जाएंगी ।**"

(سنن ابن ماجہ ، کتاب الاذان والسنۃ فیھا، باب فضل الاذان ، حدیث ۷۲۸، ج ۱، ص ٤۰۲)

www.dawateislami.net

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस किया मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइक़े बख़्शिश, अज़् इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अज़ान का जवाब

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब मुअज़्ज़िन اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे तो तुम में से कोई اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ कहे तो वोह शख़्स لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ कहे तो वोह शख़्स لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कहे, फिर जब मुअज़्ज़िन اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे तो वोह शख़्स اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे और जब मुअज़्ज़िन لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे और येह शख़्स दिल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे तो **जन्नत में दाख़िल होगा।**"

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل قول الموذن الخ، حدیث ۳۸۵، ص ۲۰۳)

वोह ख़ुल्द जिस में उतरेगी अबरार की बरात
अदना निछावर इस मेरे दूल्हा के सर की है

म-दनी इन्आ़म नम्बर 4 में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, फ़ोन पर गुफ़्त-गू, स्कूटर कार चलाना वग़ैरा तमाम कामकाज मौक़ूफ़ कर के **अज़ान व इक़ामत का**

www.dawateislami.net

जवाब दिया ? (अगर पहले से खा पी रहे हों और अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकते हैं)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सफ़ की दुरुस्ती

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरवरे ज़ीशां, दो जहां के सुल्तां صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा ।"** (طبرانی اوسط، حدیث ۵۷۹۷، ج ٤، ص ۲۲۵)

येह मर्ह़मतें कि कच्ची मतें न छोड़ें लतें न अपनी गतें
क़ुसूर करें और इन से भरें क़ुसूरे जिनां तुम्हारे लिये

(ह़दाइके़ बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** के सुन्नतों भरे महके महके म-दनी माह़ोल में नमाज़ व दुआ़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ का म-दनी ज़ेह्न दिया जाता है । चुनान्चे मेरे आक़ा, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : **म-दनी इन्आ़म नम्बर 44 :** क्या आज आप ने नमाज़ व दुआ़ के दौरान ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन में आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिल में गिड़गिड़ाने की कैफ़िय्यत) पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब का लिह़ाज़ रखा ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिज़ाए इलाही (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मस्जिद बनाना

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी चाहते हुए **मस्जिद** बनाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा ।**"

(صحیح بخاری، کتاب الصلوۃ، باب من بنی مسجدا، حدیث ٤٥٠، ج ١، ص ١٧١)

शाद है फ़िरदौस या 'नी एक दिन
क़िस्मते ख़ुद्दाम हो ही जाएगा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलाम को आ़म करना, खाना खिलाना, सिलए रेह़्मी और रात को नमाज़ पढ़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब आक़ाए नामदार, रसूलों के सालार, शहन्शाहे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए पुर अन्वार तशरीफ़ लाए तो लोग जूक़ दर जूक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने लगे। मैं भी उन लोगों में शामिल था। जब मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेह्रए मुबारक को ग़ौर से देखा और छानबीन की तो जान लिया कि येह किसी झूटे का चेहरा नहीं और पहली बात जो मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी वोह येह थी कि "ऐ लोगो ! सलाम को आ़म करो और मोह़्ताजों को खाना खिलाया करो और सिलए रेह़्मी इख़्तियार करो और रात को जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ा करो **जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे ।**" (سنن ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ٤٢، حدیث ٢٤٩٣، ج ٤، ص ٢١٩)

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त, आ़मिले क़ुरआनो सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 6** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वग़ैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुए, राह में खड़े या बैठे हुए **मुसल्मानों को सलाम** किया ?

शहा अपनी जन्नत में क़दमों में रखना
येही आ़जिज़ाना मेरी इल्तिजा है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 453)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े तहज्जुद

ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तमाम लोग एक ही जगह इकठ्ठे होंगे फिर एक मुनादी निदा करेगा कि "कहां हैं वोह लोग जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते थे ?" फिर वोह लोग खड़े होंगे और वोह ता'दाद में बहुत कम होंगे और **बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे,** फिर तमाम लोगों से ह़िसाब शुरूअ़ होगा। (الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، حدیث ۹، ج ۱، ص ۲٤۰)

उन के करम के सदक़े फ़ज़्लो करम पे क़ुरबां
अ़त्तार को वोह ले कर जन्नत में जा रहे हैं

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 300)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **जन्नत** में एक दरवाज़ा है जिसे दुह़ा कहा जाता है जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मुनादी निदा करेगा **नमाज़े चाश्त** की पाबन्दी करने वाले कहां हैं ? येह तुम्हारा दरवाज़ा है इस में दाख़िल हो जाओ।" (طبرانی اوسط، حدیث ٥٠٦٠، ج ٤، ص ١٨)

बे अ़दद ग़ुलाम आक़ा ख़ुल्द जा रहे हैं काश !
मैं भी साथ उन के या शाहे बह़रो बर जाता

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 157)

जन्नत की अ-बदी ने'मतों के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! साह़िबे करामत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नवाफ़िल की कसरत करते और अपने मु-तअ़ल्लिक़ीन व मुरीदीन को भी इस की तरग़ीब दिलाते रहते हैं। चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 19** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने **तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त** और **अव्वाबीन** अदा फ़रमाई ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 20** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार **तह़िय्यतुल वुज़ू** और **तह़िय्यतुल मस्जिद** अदा फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पांच आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि पांच आ'माल ऐसे हैं जो इन्हें एक दिन में करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नतियों** में लिखेगा :

(1) मरीज़ की इ़यादत करना (2) जनाज़े में ह़ाज़िर होना (3) एक दिन का रोज़ा रखना (4) जुमुआ़ के लिये जाना और (5) ग़ुलाम आज़ाद करना।

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب مایفعل من الخیر یوم الجمعۃ، حدیث ٣٠٢٧، ج٢، ص ٣٨٢)

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 53** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़् कम एक मरीज़् या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **ग़म ख़्वारी** की ? और उस को तोह़फ़ा (ख़्वाह मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

या ख़ुदा मग़्फ़िरत कर दे अ़त्तार की
इस को जन्नत में दे दे नबी का जवार

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कलिमए त़य्यिबा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़् رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"जिस का आख़िरी कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"** (المستدرك، كتاب الدعاء والذكر، الحديث ١٨٨٥، ج٢، ص١٧٥)

मद्फ़न हो अ़त़ा मीठे मदीने की गली में
लिल्लाह पड़ोसी मुझे जन्नत में बना लो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 308)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े जनाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन हुबैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्की म-दनी सरकार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो मुसल्मान मर जाए

www.dawateislami.net

और उस पर मुसल्मानों की **तीन सफ़ें** नमाज़ पढ़ें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **जन्नत** वाजिब फ़रमा देता है। (سنن ابی داود، کتاب الجنائز، حدیث ۳۱۶۶، ج۳، ص ۲۷۰)

जन्नती का जनाज़ा

मीठे मीठे आक़ा, म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "जब कोई **जन्नती शख़्स** फ़ौत हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे जो इस का जनाज़ा ले कर चलें और जिन्हों ने इस की **नमाज़े जनाज़ा** अदा की।

(الفردوس بماثور الخطاب ج۱ ص۲۸۲ حدیث۱۱۰۸)

नारे दोज़ख़ में गिरा ही चाहता था मैं निसार
अपनी रह़मत से अ़ता फ़रमाई जन्नत या रसूल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 242)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ता'ज़ियत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महशर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से **ता'ज़ियत** करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नत** के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती।" (المعجم الاوسط للطبرانی، حدیث ۹۲۹۲، ج۶، ص ۴۲۹)

या शहे अबरार ! दे दो ख़ुल्द में अपना जवार
अज़ पए ग़ौसुल वरा हो चश्मे रह़मत या रसूल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 242)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीन बच्चों का इन्तिक़ाल

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस मुसल्मान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से उसे और उन बच्चों को **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा।" एक रिवायत में है कि "जिस के तीन बच्चों का इन्तिक़ाल हो जाए वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।"

(بخاری، کتاب الجنائز، باب ماقیل فی اولاد المسلمین...الخ، حدیث ۱۳۸۱، ج۱، ص ۵۶۵)

पड़ोसी बना मुझ को जन्नत में उन का
ख़ुदाए मुह़म्मद बराए मदीना

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कच्चा बच्चा

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस मुसल्मान जोड़े (मियां बीवी) के तीन बच्चे इन्तिक़ाल कर जाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन दोनों मियां बीवी और उन बच्चों पर फ़ज़्लो रह़मत करते हुए **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा।" सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ किया : "और दो बच्चे ?" फ़रमाया : "और दो बच्चे।" सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ किया : "और एक ?" फ़रमाया : "और एक।" फिर फ़रमाया : "उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जिस औ़रत का **कच्चा बच्चा** फ़ौत हो जाए (या'नी ह़म्ल ज़ाएअ़ हो

www.dawateislami.net

जाए) और वोह उस पर सब्र करे तो वोह **बच्चा अपनी मां को अपनी नाड़ू के ज़रीए खींचता हुवा जन्नत में ले जाएगा ।"**

(مسند احمد ، حدیث معا ذ بن جبل مسند الانصار،حدیث ۲۲۱۵۱،ج۸،ص ۲۵٤)

हश्र में सरकार आना मेरे ऐबों को छुपाना

अपने रब से बख़्शवाना साथ जन्नत में बसाना

یَانَبِی سَلامٌ عَلَیْکَ صَلوَاتُ اللّٰہِ عَلَیْکَ

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 617)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पाबन्दे सौमो सलातो सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **म-दनी इन्आ़म नम्बर 57** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को मक्तूब रवाना फ़रमाया ? (मक्तूब में म-दनी क़ाफ़िले और म-दनी इन्आ़मात वग़ैरा की तरग़ीब दिलाएं)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक्तूब वाले इस म-दनी इन्आ़म के ज़रीए हम ब आसानी बेहतर अन्दाज़ से इयादत व ता'ज़ियत की सआ़दत पा सकते हैं ।

ख़ैर ख़्वाही के म-दनी जज़्बे से सरशार, भटके हुओं के रहबरो ग़म ख़्वार, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ब ज़रीअ़ए मक्तूब किस त़रह़ ता'ज़ियत फ़रमाते हैं, आइये ! आप का एक ता'ज़ियती मक्तूब मिनो अ़न मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से **लवाह़िक़ीने मर्ह़ूम मह़म्मद शान अ़त्त़ारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की ख़िदमाते आ़लिया में म-दनी मिठास से तर बतर सलाम, اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ،اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَال

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि **मुहम्मद शान अत्तारी** हादिसे में वफ़ात पा गए हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मर्हूम** को ग़रीक़े रह़मत करे, इन की क़ब्र पर रह़मतो रिज़्वान के फूल बरसाए, इन की क़ब्र और मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल हैं सब उठा कर **मर्हूम** को रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुमा दे। **मर्हूम** की मग़्फ़िरत फ़रमा कर इन्हें जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए और मर्ह़ूम के लवाह़िक़ीन को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अ़जब सरा है येह दुन्या यहां पे शामो सह़र

किसी की कूच किसी का क़ियाम होता है

अफ़्सोस ! सगे मदीना अपने आप को नेकियों से दूर और गुनाहों से भरपूर पाता है। हां, रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ इस अम्र पर क़ादिर ज़रूर है कि गुनाह व क़ुसूर को नेकियों से बदल दे। लिहाज़ा ख़ुदाए मजीद से येही उम्मीद है कि वोह मुझ पापी व बदकार के गुनाहों को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े ज़रूर नेकियों से बदल देगा और इसी उम्मीद पर मैं अपनी ज़िन्दगी की तमाम तर नेकियां बारगाहे मुस-त़-फ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में नज़्र कर के "**मर्हूम मुह़म्मद शान अ़त्तारी**" की **नज़्र** करता हूं।

अ़जब नैरंगिये दुन्या है कि एक त़रफ़ किसी का जनाज़ा उठाया जा रहा है जब कि दूसरी त़रफ़ किसी को दूल्हा बनाया जा रहा है। एक त़रफ़ ख़ुशी के शादियाने बज रहे हैं तो दूसरी त़रफ़ किसी की मय्यित पर आहो फ़ुग़ां का शोर है।

www.dawateislami.net

नसीमे सुब्ह़ गुलशन में गुलों से खेलती होगी
किसी की आख़िरी हिचकी किसी की दिल-लगी होगी

मर्ह़ूम मुह़म्मद शान अ़त्तारी के ईसाले सवाब की ख़ातिर घर का हर मर्द (जिस की उ़म्र बीस साल से ज़ाइद हो) कम अज़ कम एक बार दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले के साथ ज़रूर सफ़र इख़्तियार करे। अपने शह्र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सभी की ख़िदमत में म-दनी इल्तिजा है।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से येह भी देखा है तू ने — जो आबद थे वोह मकां अब हैं सूने
जहग जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِکْرَام

30 मुह़र्रमुल ह़राम 1428 हि.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना और ह़ुस्ने अख़्लाक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लोगों को कसरत से **जन्नत** में दाख़िल करने वाले अ़मल के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना और ह़ुस्ने अख़्लाक़।**" फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कसरत से जहन्नम में दाख़िल करने वाली चीज़ के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**मुंह और शर्मगाह।**"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حسن الخلق، حدیث ٤٧٦، ج١، ص ٣٤٩)

www.dawateislami.net

गुनहगारो चलो दौड़ो कि वक़्त आया शफ़ाअ़त का
वोह खोला नाइबे रह़मान ने दरवाज़ा जन्नत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छ (6) चीज़ों की ज़मानत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सुल्त़ाने बह़रो बर, मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तुम मुझे छ (6) चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें **जन्नत की ज़मानत देता हूं,** (1) जब बोलो तो **सच** बोलो (2) जब **वा'दा** करो तो उसे पूरा करो (3) जब **अमानत** लो तो उसे अदा करो (4) अपनी **शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त** करो (5) अपनी **निगाहें नीची** रखा करो और (6) अपने **हाथों को रोके** रखो।"

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البر و الصلة و الاحسان..الخ، باب الصدق...الخ، حديث ٢٧١ ، ج١، ص ٢٤٥)

हम जाएंगे फ़िरदौस में रिज़्वां से येह कह कर
रोको न हमें हम हैं ग़ुलामाने मुह़म्मद

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पेट का क़ुफ़्ले मदीना वग़ैरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इर्द गिर्द बैठे हुए सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से फ़रमाया : "तुम मुझे छ (6) चीज़ों की ज़मानत दे दो तो मैं

तुम्हें **जन्नत की ज़मानत दे दूंगा ।**'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह छ (6) चीज़ें कौन सी हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**नमाज़ अदा करना, ज़कात देना, अमानत लौटाना, शर्मगाह, पेट और ज़बान की हिफ़ाज़त करना ।**''

(مجمع الزوائد ، باب فرض الصلاة،حديث ١٦١٧،ج ٢، ص ٢١)

चार यारों का सदक़ा शहा

ख़ुल्द में जा अ़ता कीजिये

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 504)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत में शर्मगाह और ज़बान के साथ साथ पेट की हिफ़ाज़त का ज़िक्र भी है । अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى **फ़ैज़ुल क़दीर** जिल्द 2 सफ़हा 121 पर लिखते हैं : पेट की हिफ़ाज़त का मत़लब येह है कि तुम इस में ह़राम खाना या पानी मत उतारो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' लगाते हुए या'नी अपने पेट को ह़राम और शुबुहात से बचाते हुए ह़लाल ग़िज़ा भी भूक से कम खाने में दीनो दुन्या के बे शुमार फ़वाइद हैं । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने भूक के फ़ज़ाइल के मु-तअ़ल्लिक़ ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' (जिल्द अव्वल तख़्रीज शुदा) में एक पूरा बाब बनाम ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' बांधा है । **आइये !** इस में से कुछ रिवायात सफ़हा 708 ता 711 मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे

मोटा मच्छर

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मच्छर जब तक भूका रहे ज़िन्दा रहता है और जब खा पी कर सैर हो

www.dawateislami.net

जाए तो मोटा हो जाता है और जब मोटा हो जाता है तो मर जाता है। येही ह़ाल आदमी का है कि जब वोह दुन्या की ने'मतों से मालामाल होता है तो उस का दिल मुर्दा हो जाता है।" (تَنۡبِیۡہُ الۡمُغۡتَرِّیۡنَ ص ٥٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मच्छर तो मोटा होते ही मौत के घाट उतर जाता और ख़ाक में मिल जाता है मगर आह ! इन्सान जब जानदार या मोटा ताज़ा हो जाता है तो बा'ज़ अवक़ात त़रह़ त़रह़ की आफ़तों से दुन्या ही में दो चार होता और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में पड़ कर **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र की होल नाकियों और जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार हो जाता है। चुनान्चे

जानदार बदन की आफ़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : जो पेट भर के खाने का आ़दी हो जाता है उस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है और जिस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है वोह शह्वत परस्त हो जाता है। और जो शह्वत परस्त हो जाता है उस के गुनाह बढ़ जाते हैं, और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं उस का दिल सख़्त हो जाता है और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की आफ़तों और रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाता है। (المنبهات للعسقلانی باب الخماسی ٥٩)

खाने की ह़िर्स से तू या रब नजात दे दे
अच्छा बना दे मुझ को अच्छी सिफ़ात दे दे

पेटू पर गुनाहों की यलग़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात है कि पेट भर कर खाना गुनाहों में इन्सान को ग़र्क़ कर

www.dawateislami.net

देता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي इर्शाद फ़रमाते हैं : ज़ियादा खाने से आ'ज़ा में फ़ितना पैदा होता और फ़साद बरपा करने और बेहूदा काम कर गुज़रने की रग़बत जनम लेती है। क्यूं कि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाता है तो उस के जिस्म में तकब्बुर और आंखों में बद निगाही की ख़्वाहिश पैदा होती है, कान बुरी बातें सुनने के मुश्ताक़ रहते हैं। ज़बान फ़ोह्श गोई पर आमादा होती है, शर्मगाह शह्वत-रानी का तक़ाज़ा करती है, पाउं ना जाइज़ मक़ामात की त़रफ़ चल पड़ने के लिये बे क़रार होते हैं। इस के बर अ़क्स अगर इन्सान भूका हो तो तमाम आ'ज़ाए बदन पुर सुकून रहेंगे। न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न बुराई को देख कर ख़ुश होंगे। ह़ज़रत उस्ताज़ अबू जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر का इर्शादे गिरामी है : पेट अगर भूका हो तो जिस्म के बाक़ी आ'ज़ा सैर या'नी पुर सुकून होते हैं। किसी शै का मुत़ा-लबा नहीं करते। और अगर पेट भरा हुवा हो तो दूसरे आ'ज़ा भूके रह जाने के बाइ़स मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।

(مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْن،الفصل الخامس البطن وحفظه، ص ۹۲)

हलके बदन की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तुम में सब से ज़ियादा वोह बन्दा पसन्द है जो कम खाने वाला और ख़फ़ीफ़ (या'नी हलके) बदन वाला है।"

(اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص ۲۰ حديث ۲۲۱)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**वज़्न कम करने का त़रीक़ा**" रिसाले में तह़रीर फ़रमाते हैं : **हुसूले सवाब** की **निय्यत** से **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाइये या'नी सादा ग़िज़ा और वोह भी ख़्वाहिश से

www.dawateislami.net

कम खाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ख़ुश अन्दाम (SMART) रहेंगे, मज़ीद फ़रमाते हैं :

किस का कितना वज़्न होना चाहिये

क़द के मुताबिक़ मर्द के लिये फ़ी इन्च एक किलो वज़्न मुनासिब है म-सलन साढ़े पांच फ़ुट के मर्द के लिये **66** किलो और सवा पांच फ़ुट की औरत का वज़्न **59** किलो। (वज़्न कम करने का तरीक़ा, स. 10)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किसी से कुछ ना मांगना

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी बैअ़त कौन करेगा ? तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस बात पर बैअ़त करें, क्या हम ने पहले आप की बैअ़त नहीं की ?" इर्शाद फ़रमाया : "इस बात पर कि **किसी से कुछ न मांगोगे।**" हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो येह बैअ़त कर ले उसे क्या मिलेगा ?" फ़रमाया : "**जन्नत।**" तो हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बैअ़त कर ली। हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मैं ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा में लोगों के एक बहुत बड़े इज्तिमाअ़ में देखा कि उन का कोड़ा नीचे गिर गया और वोह घोड़े पर सुवार थे, वोह कोड़ा एक शख़्स के कन्धे पर गिरा उस शख़्स ने वोह कोड़ा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने न लिया बल्कि घोड़े से उतरे फिर वोह कोड़ा पकड़ा।" (طبرانی کبیر، حدیث ۷۸۳۲، ج ۸، ص ۲۰۶)

www.dawateislami.net

बहुत कमज़ोर हूं क़ाबिल नहीं हरगिज़ अ़ज़ाबों के
ख़ुदारा साथ लेते जाना जन्नत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 332)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें बे जा सुवाल से बचाना चाहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 25** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने **दूसरों** से **मांग कर चीज़ें** (म-सलन चादर, फ़ोन, गाड़ी वग़ैरा) इस्ति'माल तो नहीं कीं ? (दूसरों से सुवाल करना मुरव्वत के ख़िलाफ़ है। ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास ब हिफ़ाज़त रखें।)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान से भलाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई के **सित्र को ढांपेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा** और जो किसी भूके मुसल्मान को **खाना खिलाएगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नत के फल** खिलाएगा और जो किसी प्यासे मुसल्मान को सैराब करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नत की पाकीज़ा शराब पिलाएगा।**"

(ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ١٨، حدیث ٢٤٥٧، ج ٤، ص ٢٠٤)

वसीला ख़ु-लफ़ाए राशिदीं का
तमाम अस्ह़ाबो ताबिईं का
जवार जन्नत में हो इनायत
नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 208)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

स-दक़ा और क़र्ज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "एक शख़्स **जन्नत** में दाख़िल हुवा तो उस ने **जन्नत** के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि **स-दक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अट्ठारह गुना ।**"

(المعجم الکبیر، حدیث ۷۹۷٦، ج۸، ص ۲٤۹)

دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ شैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दा म-दनी इन्आ़मात में क़र्ज़ से मु-तअ़ल्लिक़ भी बहुत प्यारा म-दनी इन्आ़म ब सूरते सुवाल मौजूद है **चुनान्चे म-दनी इन्आ़म नम्बर 41** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने **क़र्ज़** होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (आ़रिज़ी त़ौर पर अगर ली हो तो) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 421)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **जन्नत** में एक दरवाज़ा है जिस का नाम रय्यान है, उस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ादार दाख़िल होंगे, उन के सिवा कोई दाख़िल न हो सकेगा, जब दूसरे लोग उस में दाख़िल होने की कोशिश करेंगे तो येह दरवाज़ा

www.dawateislami.net

बन्द हो जाएगा और वोह उस में दाख़िल न हो सकेंगे।"

(مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، حدیث ۱۱۵۲، ص ۵۸۱)

ख़ुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से
या रसूलल्लाह का ना'रा लगाते जाएंगे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सय्यिदी व मुर्शिदी, आशिक़े रसूले अ-रबी, मुहिब्बे हर सय्यिदो सहाबी व वली, सुन्नतों के दाई, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه चन्द दिन के इलावा पूरा साल ही नफ़्ल रोज़े रखते हैं और अपने बयानात व तहरीरात व इन्फ़िरादी मुलाक़ात में इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आम नम्बर 58** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का **रोज़ा** रखा ? नीज़ इस हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में **जव शरीफ़ की रोटी** तनावुल फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कलिमा, रोज़ा और स-दक़ा

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **कलिमा** पढ़ा वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा और उस का ख़ातिमा भी कलिमे पर होगा और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा तो उस का ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले **जन्नत** होगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **स-दक़ा** किया उस का ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले **जन्नत** होगा।"

(مُسند امام احمد ج ۹ ص ۹۰ حدیث ۲۳۳۸۴)

www.dawateislami.net

थे गुनह हद से सिवा सगे अ़त्तार के
उन के स-दक़े फिर भी जन्नत मिल गई

र-मज़ान की रातों में नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में है : "जो बन्दए मोमिन **र-मज़ान** की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ उस के लिये **पन्दरह सो नेकियां** लिखता है और उस के लिये **सुर्ख़ याक़ूत का एक महल** बनाता है जिस के साठ (60) हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की मुलम्मअ़ कारी या'नी चमक दमक होगी और उस पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे।"

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 373)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे ह़ज व उ़मरह में फ़ौतगी

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमान नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो उस सम्त **ह़ज या उमरह करने निकला फिर रास्ते में ही मर गया** तो उस से कोई सुवाल न किया जाएगा और न ही उस का ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा कि **जन्नत में दाख़िल हो जा।**"

(المعجم الاوسط، حدیث ٥٣٨٨، ج ٤، ص ١١١)

www.dawateislami.net

मेरी सरकार के क़दमों में ही اِنْ شَآءَاللّٰه

मेरा फ़िरदौस में अ़त्तार ठिकाना होगा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 185)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि क़ासिमे ने'मत, मालिके जन्नत, सरापा जूदो सख़ावत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के पेट में **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **का ग़ुबार और जहन्नम का धुवां जम्अ़ नहीं फ़रमाएगा** और जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा और जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक दिन रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से जहन्नम को तेज़ रफ़्तार सुवार की एक हज़ार साल की मसाफ़त तक दूर फ़रमा देगा और जिसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ज़ख़्म लगेगा उस पर शु-हदा की मोह़र लगा दी जाएगी, जो क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी, उस का रंग ज़ा'फ़रान की त़रह़ और ख़ुश्बू मुश्क की त़रह़ होगी, उसे उस मोह़र की वज्ह से अव्वलीन व आख़िरीन पहचान लेंगे और कहेंगे फुलां पर शहीदों की मोह़र लगी हुई है और जो ऊंटनी को दो मर्तबा दोहने के दरमियान के वक़्त तक राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करे उस पर **जन्नत वाजिब हो जाती है ।**"

(مسند احمد، مسند ابی الدرداء، حدیث ۲۷۵۷۳، ج۱۰، ص ٤٢٠)

करम से ख़ुल्द में अ़त्तार जिस दम जा रहा होगा

शयातीं देखते होंगे सभी मुड़ मुड़ के ह़सरत से

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 403)

www.dawateislami.net

आ़लिमे शरीअ़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ का जज़्बा लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों से बहुत ख़ुश होते और दुआ़ओं से नवाज़ते हैं चुनान्चे फ़रमाते हैं

अपनी सारी नेकियां अ़त्तार ने कीं उस के नाम
बारह म-दनी क़ाफ़िलों में जो कोई कर ले सफ़र

म-दनी इन्आ़म नम्बर 60 में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस माह जद्वल के मुत़ाबिक़ कम अज़ कम तीन (3) दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र फ़रमाया ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 67 :** क्या आप ने इस साल जद्वल के मुत़ाबिक़ यक-मुश्त तीस (30) **दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र फ़रमाया ? (नीज़ ज़िन्दगी में यक-मुश्त **बारह (12) माह के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भी निय्यत फ़रमाएं)

दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों की म-दनी बहारों में से एक बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये और हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले की तय्यारी कीजिये चुनान्चे "फ़ैज़ाने सुन्नत" (जिल्द अव्वल तख़्रीज शुदा) में बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि

मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !

मेरी अम्मीजान सख़्त बीमारी के सबब चारपाई से उठने तक से मा'ज़ूर हो गई थीं और डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। मैं सुना करता था कि **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से दुआ़एं क़बूल होतीं और

www.dawateislami.net

बीमारियां दूर हो जाती हैं। चुनान्चे मैं ने भी दिल बांधा और **दा'वते इस्लामी** के नूर बरसाते आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में "म-दनी तरबियत गाह" ह़ाज़िर हो कर तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र का इरादा ज़ाहिर किया, इस्लामी भाइयों ने निहायत शफ़्क़त के साथ हाथों हाथ लिया, आ़शिक़ाने रसूल की मइ़य्यत में हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** बाबुल इस्लाम सिन्ध के **सह़राए मदीना** के क़रीब एक गोठ में पहुंचा, दौराने सफ़र **आ़शिक़ाने रसूल** की ख़िदमात में दुआ़ की दर-ख़्वास्त करते हुए मैं ने अम्मीजान की तश्वीश नाक ह़ालत बयान की, इस पर उन्हों ने अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़एं करते हुए मुझे काफ़ी दिलासा दिया, अमीरे क़ाफ़िला ने बड़ी नरमी के साथ इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे मज़ीद **30** दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आमादा किया, मैं ने भी निय्यत कर ली। मैं ने अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़एं कीं, तीन दिन के इस म-दनी क़ाफ़िले की **तीसरी** रात मुझे एक रोशन चेहरे वाले **बुज़ुर्ग** की ज़ियारत हुई, उन्हों ने फ़रमाया : "अपनी अम्मीजान की फ़िक्र मत करो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह सिह़्ह़त याब हो जाएंगी।" तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले से फ़ारिग़ हो कर मैं ने घर आ कर दरवाज़े पर दस्तक दी दरवाज़ा खुला तो मैं ह़ैरत से खड़े का खड़ा रह गया, क्यूं कि मेरी वोह बीमार अम्मीजान जो कि चारपाई से उठ तक नहीं सकती थीं, उन्हों ने अपने पाउं पर चल कर दरवाज़ा खोला था! मैं ने फ़र्ते मसर्रत से मां के क़दम चूमे और म-दनी क़ाफ़िले में देखा हुवा ख़्वाब सुनाया। फिर मां से इजाज़त ले कर मज़ीद 30 दिन के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया।

www.dawateislami.net

मां जो बीमार हो क़र्ज़ का बार हो रन्जो ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले मर्ज़ें इस्यां टले आओ सब चल पड़ें क़ाफ़िले चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआन पढ़ने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा कि **क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात त़ै करता जा** और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तू दुन्या में ठहर ठहर कर पढ़ा करता था तो जहां आख़िरी आयत पढ़ेगा वहीं तेरा ठिकाना होगा।"

(سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحبا ب الترتیل فی القراءۃ، حدیث ١٤٦٤، ج٢، ص ١٠٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی **"मआ़लिमुस्सु-नन"** में फ़रमाते हैं कि "रिवायात में आया है कि क़ुरआन की आयतों की ता'दाद **जन्नत के द-रजात** के बराबर है लिहाज़ा क़ारी से कहा जाएगा कि तू जितनी आयतें पढ़ सकता है उतने द-रजे त़ै करता जा तो जो उस वक़्त पूरा क़ुरआने पाक पढ़ लेगा वोह **जन्नत** के इन्तिहाई द-रजे को पा लेगा और जिस ने क़ुरआन का कोई जुज़ पढ़ा तो उस के सवाब की इन्तिहा क़िराअत की इन्तिहा तक होगी।"

وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

या नबी अ़त्त़ार को जन्नत में दे अपना जवार
वासित़ा सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 480)

www.dawateislami.net

जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से क़ुरआने पाक की ता'लीमात आ़म हो रही हैं । ता दमे तह़रीर कमो बेश **641** मदारिसुल मदीना क़ाइम हो चुके हैं, जिन में पचास हज़ार **(50000)** से ज़ाइद तु-लबा व त़ालिबात ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल कर रहे हैं ।

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इक्तालीस (41) मिनट के मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान में क़ुरआने पाक पढ़ने, पढ़ाने और इन्फ़िरादी त़ौर पर भी इस की तिलावत करने की ताकीद फ़रमाते रहते हैं **म-दनी इन्आ़म नम्बर 3** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक बार **आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़्लास** और **तस्बीहे फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पढ़ी ? नीज़ रात में **सू-रतुल मुल्क** पढ़ या सुन ली ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 13** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में पढ़ा या पढ़ाया ? नीज़ मस्जिदे मह़ल्ला की इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से दो (2) घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच गए ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ल्क़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम्हारा गुज़र **जन्नत** की क्यारियों पर से हो तो उस में से कुछ न कुछ चुन लिया करो ।" सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़

www.dawateislami.net

किया : "**जन्नत की क्यारियां** क्या हैं ?" फ़रमाया : "**ज़िक्र के हल्क़े** ।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۷، حدیث ۳۵۲۱، ج ۵، ص ۳۰٤)

शहा जब ख़ुल्द में आप आगे आगे जाएं उस दम काश !
मैं भी हो जाऊं पीछे पीछे दाख़िल या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 337)

जन्नत की क्यारियों के तलब गार इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी, सूबाई, हफ़्तावार (शबे जुमुआ़, मस्जिद इज्तिमाअ़) और बड़ी रातों के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर शिर्कत की सआ़दत हासिल किया करें, ना सिर्फ़ तन्हा बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी साथ लाया करें । मालिके **जन्नत**, क़ासिमे ने'मत, मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े **जन्नत** की बहारें देखना नसीब हो जाएंगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । पैकरे इल्मो हिक्मत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इज्तिमाआ़त की तरग़ीब दिलाते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 51** में इर्शाद होता है : क्या आप ने इस हफ़्ते **इज्तिमाअ़** में आग़ाज़ ही से शरीक हो कर (जितना बैठ सकें उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर हत्तल इम्कान निगाहें नीची किये हर बयान, ज़िक्र व दुआ़ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और मस्जिद में (बमअ़ हल्क़ा तहज्जुद व नमाज़े फ़ज्र, इशराक़, चाश्त) **सारी रात ए'तिकाफ़** फ़रमाया ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 56** में इर्शाद होता है : क्या आप ने इस हफ़्ते अ़लाक़ाई **मस्जिद इज्तिमाअ़** में कम अज़ कम एक नए इस्लामी भाई को साथ ले जा कर अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

कलिमाते रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दुखिया दिलों के चैन, सरवरे कौनेन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ وَھُوَ الْحَیُّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

कहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे येह कलिमात पढ़ने की वज्ह से **जन्नते नईम में दाख़िल फ़रमाएगा ।"**

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ، حدیث ۱۶۸۲۵، ج ۱۰، ص ۹۵)

तुम्हारा हूं ग़ुलाम और है ग़ुलामी पर मुझे तो नाज़
करम से साथ जन्नत में चलूंगा या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 325)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लाह़ौल शरीफ़ की कसरत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे अबरार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ की कसरत किया करो क्यूं कि येह **जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है ।"**

क़िस्मत में ग़मे दुन्या जन्नत का क़बाला हो
तक़्दीर में लिख्खा हो जन्नत का मज़ा करना

(सामाने बख़्शिश अज़ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दुरूद शरीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस मुसल्मान के पास स-दक़ा करने को कुछ न हो उसे चाहिये कि अपनी दुआ में येह कलिमात कह लिया करे : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ وَصَلِّ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा, मुअमिनीन और मुअमिनात और मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।" क्यूं कि येह ज़कात है और मोमिन कभी ख़ैर (भलाई) से शिकम सैर नहीं होता यहां तक कि **जन्नत** उस का ठिकाना होती है।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبا ن کتا ب الرقائق ،با ب الأدعیہ، رقم ۹۰۰ ،ج۲ ،ص ۱۳۰)

मुन्तज़िर हैं जन्नतें उस के लिये
विर्द है जिस का सनाए मुस्त़फ़ा

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़े मह़रे रिसालत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी तह़रीरात व बयानात और इन्फ़िरादी त़ौर पर भी दुरूदे पाक की कसरत करते और इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं और **म-दनी इन्आ़म नम्बर 5** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने अपने **श-जरे** के कुछ न कुछ **अवराद** और कम अज़ कम **313** बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिये ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़िदमते वालिदैन

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : "उस की नाक ख़ाक आलूद हो।" अ़र्ज़ किया गया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस की ?" फ़रमाया : "जो अपने **वालिदैन** या उन में किसी एक को बुढ़ापे में पाए और (उन की ख़िदमत कर के) **जन्नत** में दाख़िल न हो सके।"

(صحیح مسلم، کتا ب البر و الصلة ،باب رغم من ادرك ابویه ،حدیث ٦٥١٠ ، ص ١١٢٦)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वालिदैन के हुक़ूक़ से मु-तअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "**समुन्दरी गुम्बद**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के पहली फ़ुरसत में इस का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल वालिदैन की ख़िदमत के जज़्बे से सरशार हो जाएगा । आइये ! दा'वते इस्लामी की एक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" का पेश कर्दा रिसाला "गूंगा मुबल्लिग़" से रिसाला "समुन्दरी गुम्बद" की एक अनोखी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 30 जूलाई 2007 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया

www.dawateislami.net

शैख़ूपूरा (पंजाब) में मुन्अ़क़िद हुवा। उस अ़लाक़े में **गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों** में काम शुरूअ़ हुए ज़ियादा अ़र्सा नहीं हुवा था मगर इस्लामी भाइयों की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से इज्तिमाअ़ में कसीर ता'दाद में गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की।

मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**समुन्दरी गुम्बद**" की मदद से इशारों की ज़बान में बयान किया। येह रिसाला वालिदैन की इत़ाअ़त के मौज़ूअ़ पर अपनी मिसाल आप है। वालिदैन की इत़ाअ़त की फ़ज़ीलत और ना फ़रमान औलाद पर अ़ज़ाब का तज़्किरा इशारों की ज़बान में सुन कर गूंगे बहरे इस्लामी भाई आबदीदा हो गए। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़लम के लिखे हुए अल्फ़ाज़ का असर था कि वहां पर मौजूद डीफ़ क्लब का सद्र अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सका। वोह दौराने बयान उठा और मुबल्लिग़ के सीने से लग कर रोने लगा। बहर ह़ाल रिक़्क़त अंगेज़ माह़ोल में बयान जारी रहा। बा'दे इज्तिमाअ़ जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद होने के लिये नाम लिखने का सिल्सिला हुवा तो ऐसा लग रहा था जैसे हर एक गूंगा चाहता है कि मैं पहले अपने आप को अ़त्तारी रंग में रंग लूं। शु-रकाए इज्तिमाअ़ ने नमाज़ों की पाबन्दी और इज्तिमाआ़त में शिर्कत की निय्यत करने के साथ साथ आयिन्दा ज़िन्दगी इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़ारने का भी अ़ज़्म किया। इस इज्तिमाअ़ में मौजूद 4 बद मज़्हब गूंगे बहरों ने भी तौबा की और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर "अ़त्तारी" भी बन गए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिलए रेह़मी[1]

एक रिवायत में है कि शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "और **रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी करो ।**" जब वोह (आने वाला) लौट गया तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं ने उसे जिस चीज़ का हुक्म दिया है अगर येह उस पर अ़मल करे तो **जन्नत** में दाख़िल होगा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस में **तीन ख़स्लतें** होंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ह़िसाब आसानी से लेगा और उसे अपनी रह़मत से **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा ।" सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह ख़स्लतें कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो, जब तुम येह आ'माल बजा लाओगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें **जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।**"

(المستدرك، كتاب التفسير، باب ثلاث من كن فيه...الخ، حديث ٣٩٦٨، ج٣، ص ٣٦٢)

मुफ़्लिसो उन की गली में जा पड़ो
बागे़ ख़ुल्द इकराम हो ही जाएगा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : सिलए रेह़मी, ज़ुल्म के भयानक अन्जाम और मुसल्मानों का एह़तिराम करने के फ़ज़ाइल वग़ैरा से आगाही ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**", "**एह़तिरामे मुस्लिम**" और केसिट बयान "**रिश्तेदारी काटना ह़राम है**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के इस्तिफ़ादा कीजिये ।

www.dawateislami.net

बहन बेटियों की परवरिश

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस की **तीन बेटियां या तीन बहनें** हों या **दो बेटियां** या **दो बहनें** हों फिर वोह उन की अच्छी त़रह़ परवरिश करे और उन के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे तो **उस के लिये जन्नत है।**"

(جـامع الترمذی، کتاب البر و الصلة، حدیث ۱۹۲۳، ج ۳، ص ۳٦۷)

एक रिवायत में है कि "जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ **अच्छा सुलूक** करे तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।"

(جـامع التر مذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی النفقة، حدیث ۱۹۱۹، ج ۳، ص ۳٦٦)

एक रिवायत में है कि "फिर वोह उन की अच्छी तरबियत करे और उन के साथ अच्छा बरताव करे तो उस के लिये **जन्नत** है।"

(ماخوذ از جامع الترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی النفقة ... الخ، حدیث ۱۹۱۹، ج ۳، ص ۳٦٦)

बाग़े जन्नत में चले जाएंगे बे पूछे हम
वक़्फ़ है हम से मसाकीन पे दौलत उन की

(ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यतीम की कफ़ालत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि साहि़बे क़ुरआन, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने **किसी यतीम या मोह़ताज की कफ़ालत की अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा और **जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।**"

(مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب تجهیز المیت...الخ، حدیث ٤٠٦٦، ج ۳، ص ۱۱٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं और **यतीम की कफ़ालत** करने वाला **जन्नत** में इस त़रह़ होंगे।" फिर अपनी शहादत और बीच वाली उंगली की त़रफ़ इशारा करते हुए उन दोनों को खोल दिया।

(صحیح بخاری، کتا ب الادب، حدیث ٦٠٠٥، ج ٤ ص١٠٢)

येह बे ख़टके गुनहगारों का दाख़िल ख़ुल्द में होना
करिश्मा है रसूलुल्लाह की चश्मे करामत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ा आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मरीज़ की इयादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो किसी **मरीज़ की इयादत करता है** या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने किसी इस्लामी भाई से मिलने जाता है तो एक मुनादी उसे मुख़ात़ब कर के कहता है कि "ख़ुश हो जा क्यूं कि तेरा येह चलना मुबारक है और **तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।**"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی زیارة الاخوان، حدیث ٢٠١٥، ج ٣، ص ٤٠٦)

जिसे चाहें बख़्शें कि ख़ुल्दो जिनां में
ख़ुदा की क़सम दख़्ले सरकार होगा

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मरीज़ व दुखिया इस्लामी भाइयों की ग़म ख़्वारी की ताकीद करते हुए

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़म नम्बर 53 में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुताबिक़ **ग़म ख़्वारी** की ? और उस को तोह्फ़ा (ख़्वाह मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **तुम में से कौन जन्नत में जाएगा ?**" हम ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" फ़रमाया कि "नबी जन्नत में जाएगा, सिद्दीक़ जन्नत में जाएगा और वोह शख़्स भी जन्नत में जाएगा जो मह्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने किसी भाई से मिलने शह्र के मुज़ाफ़ात में जाए।"

(المعجم الاوسط،حديث ١٧٤٣، ج١، ص ٤٧٢)

फ़ेहरिस्त खुली जिस दम जन्नत में पहुंचने की
पहले ही निकल आया नम्बर तेरी उम्मत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किस क़दर सआ़दत मन्द हैं वोह इस्लामी भाई जो अत़राफ़ गाउं में म-दनी क़ाफ़िला, बयान, म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत, म-दनी मश्वरा और बैनल अक़्वामी या सूबाई इज्तिमाअ़ की दा'वत वग़ैरा के लिये सफ़र इख़्तियार करते हैं नीज़ अपने ह़ल्के़ व अ़लाके़

www.dawateislami.net

वग़ैरा में 12 म-दनी कामों में शरीक हो कर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहते हैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : **म-दनी इन्आ़म नम्बर 22 :** क्या आज आप ने कम अज़् कम दो इस्लामी भाइयों को **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए म-दनी क़ाफ़िले व म-दनी इन्आ़मात और दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाई ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 52 :** क्या आप ने इस हफ़्ते इज्तिमाअ़ के फ़ौरन बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नए नए इस्लामी भाइयों से **मुलाक़ात** का शरफ़ ह़ासिल कर के इन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर ह़ासिल किया ? (कम अज़् कम चार से मुलाक़ात और कम अज़् कम एक का पता वग़ैरा ज़रूर लें फिर इन से राबित़ा भी रखें) **म-दनी इन्आ़म नम्बर 61 :** क्या इस माह आप की इन्फ़िरादी कोशिश से कम अज़् कम एक इस्लामी भाई ने **म-दनी क़ाफ़िले** में **सफ़र किया ?** और कम अज़् कम एक ने **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाया ?**

आइये फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल तख़्रीज शुदा) के बाब **''फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह''** सफ़ह़ा 29 से इन्फ़िरादी कोशिश की बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं :

ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश

एक आ़शिक़े रसूल ने मुझे तह़रीर दी थी उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में जुम्आ़रात को होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये मुख़्तलिफ़

www.dawateislami.net

अ़लाक़ों से भर कर आई हुई मख़्सूस बसें वापसी के इन्तिज़ार में जहां खड़ी होती हैं वहां से गुज़रा तो क्या देखता हूं कि एक ख़ाली बस में गाने बज रहे हैं और ड्राइवर बैठ कर चरस के कश लगा रहा है। मैं ने जा कर ड्राइवर से महब्बत भरे अन्दाज़ में मुलाक़ात की, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुलाक़ात की ब-रकात फ़ौरन ज़ाहिर हुई और उस ने ख़ुद ब ख़ुद गाने बन्द कर दिये और चरस वाली सिगरेट भी बुझा दी, मैं ने मुस्कुरा कर सुन्नतों भरे बयान की केसिट "**क़ब्र की पहली रात**" उस को पेश की। उस ने उसी वक़्त टेप रेकॉर्डर में लगा दी, मैं भी साथ बैठ कर सुनने लगा कि दूसरों को बयान सुनाने का मुफ़ीद त़रीक़ा येही है कि ख़ुद भी साथ में सुने। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ने बहुत अच्छा असर लिया। घबरा कर गुनाहों से तौबा की और बस से निकल कर मेरे साथ इज्तिमाअ़ में आ कर बैठ गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ाजत रवाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मुह़म्मदे म-दनी, रसूले अ़-रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी इस्लामी भाई की **ह़ाजत रवाई** के लिये चलता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अपनी जगह वापस आने तक उस के हर क़दम पर उस के लिये **70** नेकियां लिखता है और उस के **70** गुनाहों को मिटा देता है। फिर अगर उस के हाथों वोह ह़ाजत पूरी हो गई तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था, जिस दिन उस की मां ने उसे जना था और अगर इस दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह **बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगा।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، حدیث ۱۳، ج ۳، ص ۲٦٤)

www.dawateislami.net

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं
जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 120)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद अपने दादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से रिवायत करते हैं कि शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और तौह़ीद में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : "क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है कि "तू कौन है ?" तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि "**मैं वोह ख़ुशी हूं** जिसे तूने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे **रोज़े क़ियामत के मनाज़िर** दिखाऊंगा और तेरे लिये **तेरे रब** عَزَّوَجَلَّ **की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلین، حدیث ۲۳، ج ۳، ص ۲٦٦)

शोर उठा येह महशर में ख़ुल्द में गया सगे अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : इस मौज़ूअ़ पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के केसिट बयान "**दिल ख़ुश करने के फ़ज़ाइल**" और "**मुश्किल कुशाई की फ़ज़ीलत**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के सुनें, बेह़द फ़ाएदा ह़ासिल होगा। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ग़ुस्सा न करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे **जन्नत** में दाख़िल कर दे।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"ग़ुस्सा मत किया करो तुम्हें जन्नत ह़ासिल हो जाएगी।"** (المعجم الاوسط ،باب الف ،حدیث ۲۳۵۳ ،ج۲، ص ۲۰)

चाहो जिसे फ़िरदौस में जा दो चाहो जिसे दोज़ख़ में भेजो
जन्नतो नार हैं मिल्क तुम्हारी हो मुख़्तार रसूलुल्लाह

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्सा पीना

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद **ग़ुस्सा पी ले अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के सामने बुलाएगा ताकि उस को इख़्तियार दे कि **जन्नत की ह़ूरों में से जिसे चाहे पसन्द कर ले।"**

(ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحلم ،حدیث ٤١٨٦ ،ج٤، ص ٤٦٢)

उठा कर ले गईं ह़ूरें जिनां में
क़दम पर उन के जिस ने जां फ़िदा की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़फ़्वो दर गुज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब बन्दों

www.dawateislami.net

को हिसाब के लिये खड़ा किया जाएगा तो एक क़ौम अपनी गरदनों पर अपनी तलवारें रखे आएगी और **जन्नत** के दरवाज़े पर आ कर रुक जाएगी। पूछा जाएगा, "येह कौन लोग हैं ?" जवाब मिलेगा, "येह वोह शु-हदा हैं जो ज़िन्दा थे और इन्हें रिज़्क़ दिया जाता था।" फिर एक मुनादी निदा करेगा कि "जिस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो जाए और **जन्नत में दाख़िल हो जाए।**" फिर दोबारा येही निदा की जाएगी।" हाज़िरीन में से किसी ने पूछा : "वोह कौन हैं जिन का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा ?" म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "लोगों को मुआ़फ़ करने वाले।" (फिर फ़रमाया :) "तीसरी मर्तबा भी येही निदा दी जाएगी कि जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो जाए और **जन्नत** में दाख़िल हो जाए फिर इतने इतने हज़ार लोग खड़े होंगे और **जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल हो जाएंगे।**"

(المعجم الاوسط، باب الف، حديث ١٩٩٨، ج١، ص ٥٤٢)

फ़ातेहे बाबे शफ़ाअ़त के सबब हुक्म मिला
जाएं जन्नत में गदायाने रसूले अ-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ज़ाती मुआ-मलात में अफ़्वो दर गुज़र से काम लेते और तहदीसे ने'मत के लिये इर्शाद फ़रमाया करते हैं : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने अन्दर इन्तिक़ाम का जज़्बा नहीं पाता।" काश ! हम से भी बे जा गुस्सा, जज़्बाती पन और अपनी ज़ात की ख़ातिर इन्तिक़ाम लेने की आ़दते बद निकल जाए।

माहताबे र-ज़विय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 28** में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने (घर में या

www.dawateislami.net

बाहर) किसी पर ग़ुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **ग़ुस्से का इलाज** फ़रमाया या बोल बड़े ? नीज़ **दर गुज़र** से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ ढूंडते रहे ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन मुबारक ख़स्लतें

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन ख़स्लतें जिस में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा और उसे अपनी **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा, (1) कमज़ोरों पर **रह़म** करना (2) वालिदैन पर **शफ़क़त** करना (3) हुक्मरानों के साथ **भलाई** करना।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الرفق، حدیث ۱۰، ج۳، ص ۲۷۹)

हुक्म होगा कि उसे दाख़िले जन्नत कर दो
जिस के दिल में है तमन्नाए रसूले अ़-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पर्दा पोशी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़ुयूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी भाई के किसी ऐ़ब को देख ले और उस की पर्दा पोशी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस पर्दा पोशी की वज्ह से **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा।"

(المعجم الکبیر مسند عُقْبَة بن عامر، حدیث ۷۹۵، ج۱۷، ص ۲۸۸)

www.dawateislami.net

दाख़िले ख़ुल्द किये जाएंगे अहले इस्यां

जोश पर आएगी जब शाने रसूले अ़-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने भाई की **पर्दा पोशी** करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की **पर्दा पोशी** फ़रमाएगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के राज़ ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।" (سنن ابن ماجه، کتاب الحدود ،باب الستر علی المومن ،حدیث ٢٥٤٦، ج٣ ،ص ٢١٩)

क्यूं रोकते हो ख़ुल्द से मुझ को मलाएका

अच्छा चलो तो शाफ़ेए महशर के सामने

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला हमारे ऐ़बों पर अपनी सत्तारी की चादर डाल कर बरोज़े क़ियामत सारी मख़्लूक़ के सामने हमें रुस्वाई से बचा ले और महज़ अपने फ़ज़्लो करम से अपनी **जन्नत** में दाख़िल फ़रमा दे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आ़लिमे शरीअ़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें गुनाहों के मरज़ से नजात दिला कर नेक बनाना चाहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 42** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने किसी मुस्लमान के उ़यूब पर मुत्तलअ़ हो जाने पर उस की **पर्दा पोशी** फ़रमाई या (बिला

www.dawateislami.net

मस्लहते शर–ई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिग़ैर उस की इजाज़त) दूसरे को बता कर **ख़ियानत** तो नहीं की ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मीठे मीठे मुस्तफ़ा, सुल्ताने अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करे और उसे बता दे कि मैं तुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करता हूं तो वोह **दोनों जन्नत में दाख़िल होंगे** फिर अगर महब्बत करने वाला बुलन्द मर्तबे में होगा तो जिस से वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के लिये महब्बत करता था** उसे उस के साथ मिला दिया जाएगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب المتحابين فی الله ،حديث ١٨٠١٥، ج١٠، ص ٤٩٦)

ज़हे क़िस्मत इशारा पा के उन की चश्मे रह़मत का
ग़ुलामों को लुभा कर ले चली जन्नत मुह़म्मद की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र–ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलाम आ़म करना

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**रह़मान** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और सलाम को आ़म करो और खाना खिलाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان ، کتاب البر والاحسان ،باب افشاء السلام، حديث ٤٨٩، ج١، ص ٣٥٦)

नबी के नाम लेवा आने वाले हैं थके हारे
सजाई जाती है इस वासिते जन्नत मुहम्मद की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर में भी सलाम करना

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन में से हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, पहला वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद के लिये निकले, वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे **जन्नत में दाख़िल फ़रमाए** या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए दूसरा वोह शख़्स जो मस्जिद की त़रफ़ जाए वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे **जन्नत में दाख़िल फ़रमाए** या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए, और तीसरा वोह शख़्स जो अपने **घर में सलाम** करते हुए दाख़िल हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।" (السنن الکبری ج۹ص۲۸۰)

पहले ही ख़ुदा हुक्म क़ियामत में येह देगा
जन्नत में चले जाएं गदायाने मुहम्मद

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

सलामती के घर या'नी **जन्नत** के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! मुसन्निफ़े फ़ैज़ाने सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **सलाम को आ़म** करने की ताकीद करते हुए **म-दनी इन्आ़म नम्बर 6** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वग़ैरा में आते जाते

www.dawateislami.net

और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे हुए **मुसल्मानों को सलाम** किया ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस्लाही बयानात और म-दनी मुज़ा-करों के केसिट वक़्तन फ़ वक़्तन घर में सुनते, सुनाते रहें, म-दनी माह़ोल बनता चला जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने घर में म-दनी माह़ोल बनाने के लिये उन्नीस (19) म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं, इन्हें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और इन के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के घर में म-दनी माह़ोल बनाइये :

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना"
के उन्नीस (19) हुरूफ़ की निस्बत से
घर में म-दनी माह़ोल बनाने के उन्नीस म-दनी फूल

﴾1﴿ घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये । ﴾2﴿ वालिदा या वालिद साह़िब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये । ﴾3﴿ दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साह़िब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें । ﴾4﴿ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये । ﴾5﴿ इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये । ﴾6﴿ सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर ग़ुस्से हो जाने, खाने में ऐ़ब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझ़ने, बह़सें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रवय्या

www.dawateislami.net

यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये। ﴾7﴿ घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी। ﴾8﴿ मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी "आप" कह कर ही मुख़ातिब हों। ﴾9﴿ अपने महल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मुयस्सर आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो। ﴾10﴿ घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो केसिटें, ऑडियो/विडियो सीडीज़ सुनाइये दिखाइये, म-दनी चेनल दिखाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "म-दनी नताइज" बरआमद होंगे। ﴾11﴿ घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "म-दनी माहोल" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है। ﴾12﴿ म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये। ﴾13﴿ अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

www.dawateislami.net

اَلدُّعَآءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ या'नी दुआ मोमिन का हथियार है। (المستدرك للحاکم ج۲ص۱۶۲ حدیث۱۸۰۵) ﴾14﴿ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शर-ई न हो। हां येह एहतियात ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के। ﴾15﴿ **मसाइलुल कुरआन** सफ़हा **290** पर है : हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल क़ाइम होगा। (दुआ येह है :) (اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ (1) (پ۱۹،الفرقان ۷۴) ("اَللّٰهُمَّ" आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं) ﴾16﴿ ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो **11** या **21** दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿۲۱﴾ لا فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ ع (2) (پ۳۰،البروج:۲۱،۲۲) (अव्वल, आख़िर, एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी

مدینہ

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों के ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

2 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफ़ूज़ में।

www.dawateislami.net

अपने शोहर पर येह अ़मल न करे। ﴾17﴿ नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के "یَاشَهِیْدُ" **21** बार पढ़िये। (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़)। ﴾18﴿ म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़-मल की आ़दत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और ह़िक्मते अ़-मली के साथ म-दनी इन्आ़मात का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। ﴾19﴿ पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में म-दनी माह़ोल बनने की "म-दनी बहारें" सुनने को मिलती हैं।

(नेकी की दा'वत, स. 192)

नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कसीर सुह़ैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि मुझे ऐसा अ़मल बताइये कि जब बन्दा उसे करे तो **जन्नत** में दाख़िल हो जाए।" उन्हों ने फ़रमाया : "जब मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येही सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि "वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान ले आए।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईमान के साथ कोई अ़मल भी इर्शाद फ़रमाइये।"

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए रिज़्क़ में से कुछ न कुछ **स-दक़ा** करे।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह फ़क़ीर हो और स-दक़े की इस्तिता़अ़त न रखता हो तो क्या करे ?" फ़रमाया : "**वोह नेकी का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ करे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह बोलने में अटक्ता हो, नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने की इस्तिता़अ़त न हो तो ?" फ़रमाया कि "**जाहिल को इल्म सिखाए ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "अगर वोह ख़ुद जाहिल हो तो ?" फ़रमाया : "**मज़लूम की मदद करे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "अगर वोह कमज़ोर हो और मज़लूम की मदद करने पर क़ादिर न हो तो ?" फ़रमाया कि "तुम अपने दोस्त में जो भलाई चाहते हो वोह येह है कि वोह लोगों को **ईज़ा देना छोड़ दे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह येह अ़मल करेगा तो **जन्नत** में दाख़िल हो जाएगा ?" फ़रमाया कि "जो मुसल्मान इन आ'माल में से कोई एक अ़मल भी करेगा **येह अ़मल ख़ुद उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल करेगा ।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترغیب فی الامر بالمعروف ... الخ، حدیث ۲۰، ج ۳ ص ۱۶۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़मिले क़ुरआनो सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमा वक़्त ज़बान व क़लम के ज़रीए, तदबीरो हिक्मत, नरमी व शफ़्क़त, उल्फ़तो मवद्दत के साथ नेकी की दा'वत देते और बुराई से मन्अ़ करने की सअ़्य करते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 12 :** क्या आज आप ने **फ़ैज़ाने सुन्नत से दो (2) दर्स** (मस्जिद, घर, दुकान, बाज़ार वग़ैरा जहां सहूलत हो) दिये या सुने ?

म-दनी इन्आ़म नम्बर 23 : क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के

www.dawateislami.net

म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्सो बयान, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) पर कम अज़ कम **दो (2) घन्टे** सर्फ़ किये ?

म-दनी इन्आ़म नम्बर 54 : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक बार **म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत फ़रमाई ?

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो ज़िन्दां टूटें ज़न्जीरें
गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

(हदाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाबीना पन पर सब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मैं अपने बन्दे को आंखों के मुआ़-मले में आज़माऊं फिर वोह सब्र करे तो मैं उस की आंखों के इ़वज़ उसे जन्नत अ़त़ा फ़रमाऊंगा ।"

(صحیح البخاری ، کتاب المرضی ، باب فضل من ذهب بصره ،حدیث ٥٦٥٣ ، ج٤ ،ص ٦)

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि "जब मैं अपने बन्दे की आंखें दुन्या में ले लूं तो **जन्नत** के इ़लावा कोई चीज़ उस का बदला न होगा ।"

(الترغیب والترهیب، کتاب الجنائز ، باب الترغیب فی الصبر ...الخ ،حدیث ٨٦ ، ج٤ ، ص ١٥٤)

एक रिवायत में है कि "मैं जिस की आंखें ले लूं फिर वोह उस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिये **जन्नत के इ़लावा किसी सवाब पर राज़ी न होउंगा ।**"

(الترغیب والترهیب، کتاب الجنائز ، باب الترغیب فی الصبر ...الخ ،حدیث٨٧ ، ج٤ ، ص ١٥٤)

www.dawateislami.net

ऐ ज़हे रह़मत सियह काराने उम्मत के लिये

हो गई आरास्ता जन्नत रसूलुल्लाह की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** के 100 से ज़ाइद शो'बाजात में से एक शो'बा **"गूंगे बहरे और नाबीना"** इस्लामी भाइयों में नेकी की दा'वत आ़म करने और इन्हें दीन के ज़रूरी अह़काम से रू शनास कराने के लिये क़ाइम किया गया है जो कि मजलिसे **"ख़ुसूसी इस्लामी भाई"** के तह़्त है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता उ़मूमी और ख़ुसूसी (गूंगे बहरे और नाबीना) इस्लामी भाई 30 दिन का तरबियती कोर्स कर के क़ुव्वते गोयाई और समाअ़त से मह़रूम अफ़्राद तक नेकी की दा'वत पहुंचाने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। इन के म-दनी क़ाफ़िले भी शहर ब शहर सफ़र करते हैं। आइये ! म-दनी क़ाफ़िले की एक बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये जिस में ख़ुसूसी इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे चुनान्चे

बाबुल मदीना कराची 2007 सि.ई. में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **नाबीना इस्लामी भाइयों** का एक **म-दनी क़ाफ़िला** मत़्लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा। उस म-दनी क़ाफ़िले में चन्द उ़मूमी इस्लामी भाई भी शामिल थे। अमीरे क़ाफ़िला ने बराबर बैठे शख़्स पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उस का नाम वग़ैरा मा'लूम

www.dawateislami.net

किया तो वोह कहने लगा कि "मैं **ईसाई मज़हब** से तअ़ल्लुक़ रखता हूं, मैं ने मज़्हबे इस्लाम का मुता-लआ़ किया है और इस मज़हब से **मु-तअस्सिर** भी हूं, मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे इस्लाम क़बूल करने में रुकावट है। मगर मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक जैसे (सफ़ेद) लिबास में मल्बूस हैं। बस में चढ़े और बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और हैरानगी तो इस बात की है कि आप के साथ नाबीना अश्ख़ास ने भी सर पर सब्ज़ इमामा और सफ़ेद लिबास को अपना रखा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है।"

उस की गुफ़्त-गू सुनने के बा'द **अमीरे क़ाफ़िला** ने उसे मुख़्तसर तौर पर "**मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई**" के बारे में बताया। फिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे **अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीने इस्लाम के लिये की जाने वाली अ़ज़ीम ख़िदमात का तज़्किरा किया और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहौल का तआ़रुफ़ भी कराया। फिर उस से कहा कि "येह नाबीना इस्लामी भाई उन्ही दुन्यादार मुसल्मानों (जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़बूल करने से कतराते रहे हैं) की इस्लाह़ के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हुए हैं।" **येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मानों से तक्लीफ़ दूर करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रास्ते में पड़ा हुवा एक दरख़्त लोगों को तक्लीफ़ देता था। एक शख़्स ने उसे लोगों के रास्ते से हटा दिया तो मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं ने उसे

www.dawateislami.net

जन्नत में उस दरख़्त के साए में लैटे हुए देखा है।''

(مسند احمد بن حنبل ،مسند اَنس بن مالك ،حديث ١٢٥٧٢ ،ج ٤ ،ص ٣٠٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो दाग़े इश्क़े शहे दीं हैं दिल पे खाए हुए

वोह गोया ख़ुल्दे बरीं की सनद हैं पाए हुए

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی)

ह़लाल कमाना और कारे सवाब में ख़र्च करना

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ''दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है, जिस ने इस में से **ह़लाल त़रीक़े से कमाया और उसे कारे सवाब में ख़र्च किया, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और **अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा** और जिस ने ह़राम त़रीक़े से कमाया और उसे नाह़क़ ख़र्च किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ज़िल्लतो ह़क़ारत के घर को ह़लाल कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले बहुत से लोगों के लिये क़ियामत के दिन जहन्नम होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 15, **सूरए बनी इसराईल** आयत 97 के आख़िरी जुज़ में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

(شعب الا يمان ، باب فى قبض اليد عن الاموال المحرمة حديث ٥٥٢٧، ج ٤ ، ص ٣٩٦)

बिशारत मिले काश ! जन्नत की फ़ौरन

क़ियामत के दिन जूं ही अ़त्तार आए

(मुग़ीलाने मदीना, अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़रीदो फ़रोख़्त, क़र्ज़ अदा करने और क़र्ज़ का मुत़ा-लबा करने में नरमी करने वाले **एक शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया ।**"

(سنن النسائی ،کتاب البیوع، باب حسن المعاملة والرفق ،ج۷، ص ۳۱۹)

रह़मते किर्दिगार عَزَّوَجَلَّ के उम्मीद वार और बहारे **जन्नत** के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! ज़हे नसीब ! हम क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी और अदाएगी में जल्दी करने वाले बन जाएं । आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **म-दनी इन्आ़म नम्बर 41** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने क़र्ज़ होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (आ़रिज़ी त़ौर पर अगर ली हो तो) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िना से बचना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन, राह़ते क़ल्बे बेचैन, नानाए ह़-सनैन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जिसे दो दाढ़ों के दरमियान** वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के **दरमियान** वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) के शर से बचा ले **वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।**"

(ترمذی، کتاب الزھد،باب حفظ اللسان،حدیث ۲۴۱۷،ج۴،ص ۱۸۴)

एक रिवायत में है कि ऐ कुरैश के जवानो ! **ज़िना मत करना** क्यूं कि जिस की जवानी बे दाग़ होगी **वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।**

(الترغیب والترھیب ، کتاب الحدود ، باب من الزنا ،حدیث ۴۱،ج۳،ص ۱۹۴)

कर दे जन्नत में तू जवार उन का
अपने अ़त्तार को अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (پ ۲۸،سُورَةُ التَّحْرِيم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।"

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि "जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल तक जलाया गया तो वोह सियाह हो गई तो अब जहन्नम काली सियाह है उस के शो'ले नहीं बुझते । येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक

www.dawateislami.net

ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा तो ह़ज़रते जिब्रईल अमीन عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ किया कि "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने रोने वाला शख़्स कौन है ?" फ़रमाया कि "ह़बशा का एक शख़्स है।" और फिर उस शख़्स की ता'रीफ़ बयान फ़रमाई तो जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल और इरतिफ़ाअ़ फ़ौक़ल अ़र्श होने की क़सम ! मेरे ख़ौफ़ के सबब जिस बन्दे की आंख रोएगी, मैं जन्नत में उस की हंसी में इज़ाफ़ा फ़रमाऊंगा।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، حدیث ۷۹۹، ج۱، ص ٤٨٩)

नारे जहन्नम से तू बचाना ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना
या रब अज़ पए शाहे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरते रहने चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला बे नियाज़ है जहां वोह आ'माले सालिह़ा म-सलन सलाम को आ़म करना, अहलो इ़याल को खिलाना पिलाना, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना, इ़बादात बजा लाना, झगड़ा तर्क करना, रिज़्क़े ह़लाल कमाना, सुन्नतें अपनाना, बा वुज़ू रहना, तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा करना, नफ़्ली नमाज़ व रोज़ा की कसरत करना, अज़ानो इक़ामत कहना और इन का जवाब देना, सफ़ के ख़ला को पुर करना, उस की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाना, नमाज़े तहज्जुद व इशराक़ व चाश्त व अव्वाबीन अदा करना,

www.dawateislami.net

मरीज़ की इयादत, किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करना, नमाज़े जनाज़ा पढ़ना, ब ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त पढ़ना, नमाज़े जुमुआ़ अदा करना, कलिमए त़य्यिबा पढ़ना, लाहौल शरीफ़ की कसरत करना, बच्चों की फ़ौतगी पर सब्र करना, ज़कात देना, अमानत लौटाना, शर्मगाह, पेट और ज़बान की हिफ़ाज़त करना, किसी से कुछ न मांगना, किसी मुसल्मान को लिबास पहनाना, खाना खिलाना, स-दक़ा व क़र्ज़ देना, माहे र-मज़ान के और नफ़्ल रोज़े रखना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ख़्म सहना, क़ुरआन पढ़ना पढ़ाना, ज़िक्र के ह़ल्क़ों म-सलन सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करना, ज़िक्रो अज़्कार करना, वालिदैन की ख़िदमत और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी करना, बेटियों, बहनों और मोह़ताज व यतीम की कफ़ालत व परवरिश करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुलाक़ात और अपने इस्लामी भाइयों की ह़ाजत रवाई व मुश्किल कुशाई करना, मुसल्मानों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करना, अच्छी आ़दात अपनाना, सच बोलना, वा'दा वफ़ा करना, निगाहें नीची रखना, ग़ुस्सा पीना, लोगों को मुआ़फ़ करना, कमज़ोरों पर रह़म करना, किसी के ऐबों पर मुत्त़लअ़ होने पर पर्दा पोशी करना, उस के राज़ छुपाना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना, नेकी की दा'वत देना, बुराई से मन्अ़ करना, जाहिल को इ़ल्म सिखाना, मज़लूम की मदद करना, ईज़ा रसानी से बचना, लोगों से तक्लीफ़ दूर करना, ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी करना, ज़िना से बचना वग़ैरा पर अपनी रह़मत से **जन्नत** अ़ता फ़रमाता है, वहीं गुनाहों के सबब **जन्नत** के दाख़िले से रोक भी लेता है चुनान्चे एक इ़ब्रत अंगेज़ रिवायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये,

www.dawateislami.net

सवाब से महरूमी

हज़रते अ़दी बिन हातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन लोगों में से कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाएगा, जब वोह लोग **जन्नत** के क़रीब पहुंच जाएंगे और उस की खुश्बूओं को सूंघ लेंगे और उस के महल्लों और जन्नतियों के लिये जो ने'मतें तय्यार की गई हैं उन को देख लेंगे तो निदा की जाएगी "इन को जन्नत से हटा दो, इन के लिये जन्नत में कोई हिस्सा नहीं है" वोह इतनी ह़सरत से **जन्नत** से लौटेंगे कि पहले इतनी ह़सरत से कोई नहीं लौटा था वोह कहेंगे कि ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ अगर तू हम को **जन्नत** और अपने सवाब को दिखाने और तूने अपने दोस्तों के लिये जो ने'मतें तय्यार की हैं, उन को हमें दिखाने से पहले दोज़ख़ में दाख़िल कर देता तो येह हमारे लिये बहुत आसान होता। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : मैं ने तुम्हारे साथ येही इरादा किया था जब तुम ख़ल्वत में होते थे तो मेरे सामने बड़े बड़े गुनाह करते थे और जब तुम लोगों से मिलते तो इन्तिहाई तक़्वा व परहेज़ गारी के साथ मिलते तुम लोगों को उस के ख़िलाफ़ दिखाते जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये ख़याल था। तुम लोगों से डरते थे और मुझ से न डरते थे, तुम लोगों को बुज़ुर्ग समझते थे, मुझे बड़ा नहीं जानते थे। तुम ने लोगों की ख़ातिर बुरे काम तर्क किये और मेरी ख़ातिर नहीं किये, आज मैं तुम को सवाब से महरूम करने के साथ साथ दर्दनाक अ़ज़ाब चखाऊंगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، ج ۱۰ ص ۳۷۷، رقم ۱۷۶۴۹)

اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ

www.dawateislami.net

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब
इ़ज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जन्नत के मह़ल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **सईद बिन मुसय्यब** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने قُلْ ھُوَ اللہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को **10** बार पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये **जन्नत में मह़ल** बनाता है जिस ने **20** बार पढ़ा उस के लिये **दो मह़ल** बनाता है जिस ने **30** बार पढ़ा उस के लिये **तीन मह़ल** बनाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त हमारे **बहुत से मह़ल्लात होंगे ?** इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है।**

(ग़ीबत की तबाह कारियां स. 133 ब ह़वाला

(سنن دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل قل ھو اللّٰہ احد، الحدیث: ۳۴۲۹، ج۲، ص ۵۵۱

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

(۱)	قران مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور
(۲)	کَنْزُالْاِیْمَان فِیْ تَرجَمَۃِالْقُرْاٰن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور
(۳)	خزائن العرفان	سید نعیم الدین مراد آبادی متوفّٰی ۱۳۲۷ھ	ضیاء القرآن کراچی
(۴)	صَحِیْحُ الْبُخَارِی	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۵)	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
(۶)	سُنَنُ اَبِیْ دَاوٗد	امام ابوداود سلیمان بن اشعث متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
(۷)	سُنَن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفّٰی ۲۸۹ھ	دار الفکر بیروت
(۸)	سنن نسائی	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب النسائی متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۹)	سُنَنُ ابنِ ماجه	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید القزوینی متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار الفکر بیروت
(۱۰)	صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۱)	المستدرك عَلَى الصَّحِيْحَيْن	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ نیشاپوری متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
(۱۲)	اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
(۱۳)	اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۴)	فِرْدَوْسُ الْاَخْبَار	حافظ شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
(۱۵)	مَجْمَعُ الزَّوَائِد	حافظ نور الدین علی بن ابوبکر ہیثمی متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
(۱۶)	شُعَبُ الْاِیْمَان	امام احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۷)	اَلْمُسْنَدُ لِلْاِمَامِ اَحْمَد بْنِ حنبل	امام احمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
(۱۸)	ابن خزیمة	امام ابوبکر محمد بن اسحاق متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت
(۱۹)	الترغیب والترھیب	امام عبدالعظیم بن عبدالقوی متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت
(۲۰)	الشفاء	قاضی ابوالفضل عیاض متوفّٰی ۵۴۴ھ	ملتان
(۲۱)	عیون الحکایات	عبدالرحمٰن بن الجوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۲)	منهاج العابدين	امام محمد بن محمد الغزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۳)	مکاشفة القلوب	امام محمد بن محمد الغزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۴)	تنبیه الغافلین	امام المواہب عبدالمواہب متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الفکر بیروت
(۲۵)	حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۲۶)	ذوقِ نعت	مولانا حسن رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	کراچی
(۲۷)	سامانِ بخشش	مفتیٔ اعظم ہند مولانا مصطفےٰ رضا خان	کراچی
(۲۸)	قبالۂ بخشش	خلیفہ اعلیٰ حضرت جمیل الرحمٰن	کراچی
(۲۹)	مکتوب امیر اہلسنّت	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۰)	وسائلِ بخشش (مرمم)	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۱)	نیکی کی دعوت	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۲)	وزن کم کرنے کا طریقہ	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्अ़रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ"** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 9326310099

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़ल्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net